सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका

संयुक्तांक (42वां & 43वां अंक)

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
संयुक्तांक(42&43 वां अंक)

पत्रिका परिवार

संरक्षक

सुश्री प्रीति अब्राहम

महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री मोहम्मद डानिष के

उप महालेखाकार(प्रशासन)

सदस्य

श्रीमती आशा जे आर
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री विष्णु एस पी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुश्री आकांशा गहलोत
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कवर पेज फोटो- श्री जी सतीशकुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार है संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

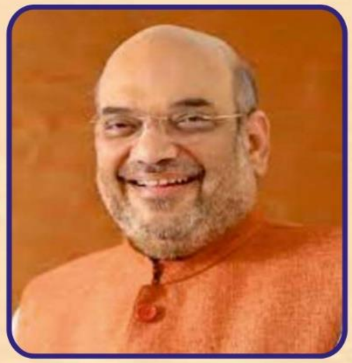

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार—विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार—प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी—20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13—14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई—गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी—नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा हैः
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

(अमित शाह)

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी ई-गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका, हमारे कार्यालय की राजभाषा हिन्दी को सशक्त बनाने के प्रयासों में एक अहम कदम है। एक राजभाषा किसी भी देश के लिए केवल सरकारी कामकाज का माध्यम नहीं होती बल्कि यह उसकी आत्मा, पहचान और एकता का प्रतीक होती है।

इस अंक में कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गई कविताएं ,कहानियाँ, लेख और आलेख हमारे कार्यालय की विविध प्रतिभाओं और रचनात्मकता का सजीव प्रमाण है। उन सभी योगदानकर्ताओं को शुभकामनाएं जिनकी रचनाएं इस प्रकाशन में सम्मिलित है। आपकी अमूल्य रचनाओं ने समग्र रूप से इस पत्रिका को एक जीवन्त रूप दिया है और यह सिद्ध कर दिया है कि मातृभाषा के समान हिंदी भाषा भी हमारी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका को पढ़ने में जो प्रसन्नता मुझे हुई है, वही प्रसन्नता आपको भी होगी। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन पर संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रीति अब्राहम

महालेखाकार

संदेश

सविता के इस विशेष अंक में मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह अंक न केवल हमारी कार्य संस्कृति का परिचायक है, बल्कि राजभाषा के प्रति यह हमारे सामूहिक प्रयासों और समर्पण का भी प्रतीक है। हमारे कार्यालय में हिंदी भाषा का प्रयोग न केवल एक औपचारिकता है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता का अभिन्न हिस्सा है। हिंदी, जो हमारे संविधान में राजभाषा के रूप में स्थापित है, हमारे विविध राष्ट्र को जोड़ने का कार्य करती है।

हमारे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए जो प्रयास किए गए हैं, वे सराहनीय हैं। विशेष रूप से, हमारे सभी कर्मचारियों ने हिंदी में अपने विचारों, सुझावों और कार्यों को प्रस्तुत करने में जो उत्साह और प्रतिबद्धता दिखाई है, वह प्रशंसा के योग्य है। आपकी मेहनत और योगदान से ही हम इस दिशा में आगे बढ़ पाए हैं।

मैं विशेष रूप से संपादन टीम का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस अंक को सुसंगत, आकर्षक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपकी मेहनत और समर्पण से ही यह अंक संभव हो पाया है।

आप सभी को धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

प्रिन्सन वर्गीस

वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए एम जी I)

संदेश

सविता पत्रिका के इस विशेष अंक में आप सभी को हार्दिक अभिनंदन। यह अंक हमारे समष्टिगत प्रयासों, समर्पण एवं कार्य संस्कृति का सजीव प्रतीक है।

हमारे कार्यालय में हिंदी भाषा का प्रयोग केवल औपचारिक अनिवार्यता नहीं, अपितु यह हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा राष्ट्रीय एकता का अभिन्न अंग है। संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है, और यह विविधतापूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। हिंदी न केवल संवाद का माध्यम है, अपितु हमारी सोच, पहचान एवं सामूहिकता की अभिव्यक्ति भी है।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए आपके उत्साहवर्धक प्रयास एवं रचनात्मक योगदान अत्यंत प्रशंसनीय हैं। इस अंक के सफल संपादन हेतु संपादकीय टीम के समर्पित सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दक्षता एवं परिश्रम ने इसे सुसंगत एवं पठनीय बनाया है।

मुझे आशा है कि हमारी पत्रिका इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के समुचित प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित करती रहेगी।

नसीफ अब्दुल खादर

वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए एम जी II)

संदेश

यह हमारे लिए हर्ष और गर्व का विषय है कि हम आपके समक्ष अपनी पत्रिका "सविता" का नया अंक प्रस्तुत कर रहे हैं। किसी भी पत्रिका की सार्थकता उसके पत्रों में छपे शब्दों से नहीं बल्कि उन शब्दों से उत्पन्न होने वाले विचारों और भावनाओं से मापी जाती है यही कारण है कि हम सदैव प्रयास करते हैं कि प्रत्येक अंक आपके मन और मस्तिष्क को एक नई दिशा प्रदान करे।

हिंदी हमारी राजभाषा है जो हमें अपनी संस्कृति, परंपरा और इतिहास से जोड़ती है। इस पत्रिका के माध्यम से हमने हिंदी के प्रति अपने प्रेम और सम्मान को और अधिक व्यापक रूप दिया है। यह अंक हमारे कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गयी कविताएँ ,कहानियाँ, ज्ञानवर्धक लेख, और प्रेरणादायक अनुभवों से संपन्न है। हमारा उद्देश्य केवल जानकारी देना ही नहीं बल्कि पाठकों में जिज्ञासा, चिंतन और रचनात्मक्ता को भी प्रोत्साहित करना हैं। आपके योगदान ने इस पत्रिका को एक जीवंत रूप दिया है और यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी भाषा हमारी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं।

इस पत्रिका की सफलता में योगदान देने वाले सभी लेखक, संकलनकर्ता, रचनाकार और सहयोगी बधाई के पात्र हैं आपके योगदान ने इस पत्रिका को अर्थपूर्ण बनाया हैं साथ ही हमारी संपादन टीम भी अपने कठिन प्रयासों के लिए विशेष धन्यवाद का पात्र हैं जिनके परिश्रम और निष्ठा ने इस अंक को आकार दिया।

आशा हैं कि यह अंक आपको केवल पढ़ने का आनंद ही नहीं देगा बल्कि आपको सोचने और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्रदान करेगा। आइए हम सभी मिलकर इसी तरह हिंदी को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाये और अपनी रचनात्मकता से "सविता" पत्रिका को और भी समृद्ध बनाएं।

आपके उत्साहपूर्ण योगदान की अपेक्षा के साथ,

एस. सुरेश कुमार

उप महालेखाकार (ए एम जी III)

संपादक मण्डल की ओर से

हर्ष और गर्व के साथ मैं आप सभी के समक्ष हमारे कार्यालय की हिंदी ई-गृह पत्रिका 'सविता' का नवीनतम अंक प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह केवल एक पत्रिका नहीं है, बल्कि हमारे कार्यालय के प्रत्येक सदस्य की रचनात्मक ऊर्जा, विचारों और भावनाओं का प्रतिबिंब है।

इस अंक की सबसे बड़ी विशेषता है – हमारे कार्यालय कर्मियों द्वारा लिखी गई कविताएँ, कहानियाँ, लेख और खींची गई सुंदर तस्वीरें। आपकी प्रतिभा और सृजनात्मकता ने इस अंक को जीवंत बना दिया है। साथ ही, मैं हमारी संपादन टीम का भी दिल से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके परिश्रम, समर्पण और रचनात्मक दृष्टिकोण के बिना यह पत्रिका संभव नहीं हो पाती। आपकी मेहनत हर पृष्ठ पर स्पष्ट दिखाई देती है।

मुझे आशा है कि ज्यादा से ज्यादा लोग पत्रिका को पढ़ेंगे और सराहेंगे। पाठकों से मिली प्रतिक्रिया के आधार पर हम इस पत्रिका रूपी मंच को और अधिक समावेशी व रुचिकर बनाने की कोशिशें जारी रखेंगे। आइए, हम सभी इस प्रयास को एक प्रेरणा मानें और आगे भी अपने विचारों और भावनाओं को साझा करते रहें। आपकी भागीदारी ही इस पत्रिका की आत्मा है।

आपके बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद ।

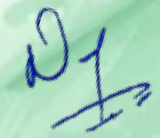

मोहम्मद डानिष के
उप महालेखाकार/प्रशासन

अनुक्रमणिका

1. राजभाषा अनुभाग स्वर्ण जयंती समारोह
2. आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस…श्री रितेश कुमार शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
3. धरती का संकट ….सुश्री अनु गोपी बी, लेखापरीक्षक
4. जीवन का असीम चक्र…… सुश्री अनिषमा विजयन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5. घर वापसी……श्री अगिल पी के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6. केरल के समुद्र तट….श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
7. भिखारी…..श्री रितेश कुमार शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
8. कल्पनाओं मे रहनेवाला …… सुश्री संधिया पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
9. मिलन…….श्री अनिल कुमार के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10. लेखापरीक्षा दिवस 2024
11. छोटा सा सहारा……..सुश्री आकांशा गहलोत, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
12. स्वर कोकिला लता मंगेशकर एक युग की अनश्वर ध्वनि ......श्री राधिका टी वी, वरि. हिन्दी अनुवादक
13. वर्ष 2024 की रिपोर्ट संख्या 6 - सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधन परः निष्पादन लेखापरीक्षा - कार्यकारी सारांश
14. अन्नम पर ब्रह्न स्वरूपं …….सुश्री निहिता साईकुमार सुपुत्री श्री साई कुमार जे, वरि. लेखापरीक्षक
15. पहला कन्याकुमारी यात्रा अनुभव……श्री आदिशंकर एस, सुपुत्र सुश्री संधिया पी वी,

राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती समारोह: दिल्ली और हैदराबाद में एक गौरवशाली उत्सव

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में, दिल्ली और हैदराबाद में दो भव्य समारोहों का आयोजन किया। इन आयोजनों का उद्देश्य भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से हिंदी के महत्व को रेखांकित करना और उन्हें जन-जन तक पहुंचाना था।

नई दिल्ली का समारोह

राजभाषा विभाग का पहला स्वर्ण जयंती समारोह 26 जून, 2025 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी थे। उनके साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मंच पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर, श्री अमित शाह जी ने कई महत्वपूर्ण पहलों का उद्घाटन किया। इनमें से प्रमुख थे:

- **ट्रेनिंग कार्यक्रम**: हिंदी भाषा, टंकण, आशुलिपि और अनुवाद के लिए ई-ट्रेनिंग कार्यक्रम को नियमित करने की घोषणा की गई।
- **भारतीय भाषा अनुभाग**: राजभाषा विभाग में एक नए 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई।
- **'शब्द सिंधु' शब्दकोश**: एक नया ऑनलाइन शब्दकोश 'शब्द सिंधु' लॉन्च किया गया, जिसका उद्देश्य आधिकारिक भाषा को अधिक सुलभ बनाना है।

हैदराबाद में 'दक्षिण संवाद'

स्वर्ण जयंती समारोह की श्रृंखला में अगला बड़ा कार्यक्रम 11 जुलाई, 2025 को हैदराबाद में "दक्षिण संवाद" के रूप में आयोजित कियाा गया। इस समारोह का उद्देश्य दक्षिण भारत में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना था। इस समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री किशन रेड्डी जी थे। राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश जी, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री पवन कल्याण जी इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों के रूप में शामिल हुए।

इस समारोह में, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। 'दक्षिण संवाद' का केंद्रीय विचार यह था कि हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के लिए एक सेतु का काम करती है, न कि उनका विकल्प। इस आयोजन ने भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि का सम्मान करने पर जोर दिया, जिससे हिंदीतर क्षेत्रों में राजभाषा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके।

राजभाषा विभाग की नई पहलों का संक्षिप्त विवरण :

हिंदी शब्द सिंधु

(एक बृहत् एवं समावेशी डिजिटल शब्दकोश)

राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को समाहित करते हुए 'हिंदी शब्द सिंधु' नामक हिंदी से हिंदी बृहत् शब्दकोश का निर्माण एक अनूठी पहल है। माननीय प्रधानमंत्री जी की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी से हिंदी डिजिटल शब्द कोश 'हिंदी शब्द सिंधु' निर्माण की परियोजना माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की प्रेरणा से राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में वर्ष 2021 में शुरू की गई थी। इसमें स्वास्थ्य, तकनीक, मीडिया, विधि आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के शब्दों को भी शामिल किया गया है। इस डिजिटल शब्दकोश से हिंदी के तकनीकी सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होगा। इसके पहले संस्करण का लोकार्पण गृह मंत्री जी ने सूरत के द्वितीय अखिल भारतीय सम्मेलन के अवसर पर किया था। तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी शब्द सिंधु के दूसरे संस्करण (3,51,000 शब्द) का लोकार्पण किया गया। चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी ने इसे वर्ष 2029 तक विश्व का सबसे बड़ा, अद्यतन और समावेशी कोश बनाने का लक्ष्य रखा है।

वेबलिंक :https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/

शब्दकोश में समाहित

- हिंदी और हिंदी क्षेत्र की बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के शब्द
- अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द
- तकनीक और विज्ञान के शब्द

- अन्य सभी क्षेत्रों के शब्द

मुख्य आकर्षण

- पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित
- शब्दकोश केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार
- यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग
- आठवीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं के कीबोर्ड की सहायता से टंकण कर शब्द खोजने - की सुविधा।
- किसी भी शब्द के विस्तृत डाटा की उपलब्धत

कंठस्थ 2.0

(अनुवाद सारथी)

राजभाषा विभाग द्वारा न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन और मेमोरी ट्रांसलेशन को समेकित करते हुए अनुवाद करने में सहायता देने वाला "कंठस्थ" नामक एक सॉफ्टवेयर टूल सी-डेक, पुणे के सहयोग से विकसित किया गया है। सूरत (गुजरात)में 14 सितंबर 2022 को सम्पन्न हुए हिन्दी दिवस और द्वितीय अखिल भारतीय सूरत में (गुजरात)14 सितंबर, 2022 को सम्पन्न हुए हिंदी दिवस और द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय गृह और सहकारिता मंत्री जी द्वारा कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण किया गया। साथ ही वर्ष 2023 में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन, फिजी में कंठस्थ 2.0 मोबाइल वर्जन का भी लोकार्पण किया गया। पुणे में (महाराष्ट्र)14-15 सितंबर, 2023 को सम्पन्न हुए हिंदी दिवस और तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर 'कंठस्थ 2.0' (अनुवाद टूल) के ई-ऑफिस के साथ एकीकृत संस्करण का लोकार्पण किया गया।

इस अद्यतन संस्करण 'कंठस्थ 2.0' में नई विशेषताएँ शामिल की गई है जिससे यह अब बेहद उपयोगी सॉफ्टवेयर बन गया है। ये फीचर इस प्रकार हैं:

अनुवाद का व्यापक डेटाबेस तथा सटीक अनुवाद- इस समय इसकी मेमोरी में 4 करोड़ से अधिक वाक्य हैं । इसके परिणामस्वरूप अब और भी सटीक अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है।

स्मार्ट चैटबोट - यह May I Help You की तरह है। इसमें नए प्रयोक्ता के लिए बहुत सारे प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दिए गए है। आप इन्हें एक प्रकार से "FAQs" या "अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न" कह सकते है। इनसे प्रयोक्ताओं को कंठस्थ का प्रयोग करने में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

वॉयस टाइपिंग - अब इस सॉफ्टवेयर में टाइपिंग करने की सुविधा भी उपलब्ध करा दी गई है। प्रयोक्ता बोलकर भी टाइप कर सकते हैं।

वेबलिंक :https://kanthasth.rajbhasha.gov.in/

भारतीय भाषा अनुभाग: भाषायी समन्वय की ओर एक कदम

भारतीय भाषा अनुभाग का उद्देश्य भारत की भाषायी विविधता को संरक्षित रखते हुए सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद को बढ़ावा देना है। इस पहल के तहत विकसित किए जा रहे सॉफ्टवेयर और तकनीकों का लक्ष्य भाषायी समन्वय को मजबूत करना और नागरिकों के लिए बहुभाषी संचार को सरल बनाना है।

इस परियोजना के अंतर्गत संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद की सुविधा दी जाएगी।

यह अनुवाद सॉफ्टवेयर न केवल स्वचालित अनुवाद को सक्षम बनाएगा, बल्कि शुद्धता, सहजता और त्वरित अनुवाद की क्षमता भी प्रदान करेगा। इसके जरिए सरकारी दस्तावेज़, अकादमिक शोध, कानूनी लेखन, तकनीकी सामग्री और प्रशासनिक संवाद को किसी भी भारतीय भाषा से दूसरी भाषा में सटीक रूप से परिवर्तित किया जा सकेगा।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य भाषायी समरसता को बढ़ावा देना है, ताकि विभिन्न भाषाभाषी - समुदायों के बीच संवाद बाधारहित हो सके। इससे नागरिकों को उनकी मातृभाषा में अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध होगी, जिससे शिक्षा, न्याय, प्रशासन और व्यापार के क्षेत्रों में भाषा संबंधी कठिनाइयाँ कम होंगी।

तकनीकी विशेषताएँ

- तत्काल अनुवाद सुविधा
- मशीन लर्निंग और न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन (NMT) आधारित उन्नत अनुवाद
- विभिन्न भाषाओं के लिए व्यापक शब्दकोश और डेटा संग्रह
- सरकारी, शैक्षणिक और व्यावसायिक उपयोग के लिए बहुभाषी समर्थन
- क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद की सुविधा हेतु 36 प्रकार के फाइल फॉर्मेट अपलोड करने की सुविधा

यह परियोजना भारत की भाषायी विविधता को जोड़ने और डिजिटल युग में सभी भाषाओं को समान अवसर देने का प्रयास है। यह पहल भारत में बहुभाषी संवाद को सहज और सुलभ बनाने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करेगा।

रितेश कुमार शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: डिजिटल कॉन्टेन्ट में अविश्वास के एक युग की शुरुआत

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने पिछले कुछ वर्षों में हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में क्रांतिकारी बदलाव किये हैं । स्वास्थ्य से लेकर व्यापार, मनोरंजन, शिक्षा और यहाँ तक कि राजनीति तक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने अपने व्यापक उपयोग से दुनिया को प्रभावित किया है । हालाँकि, इसके इस व्यापक प्रभाव ने एक गंभीर चिंता भी उत्पन्न की है, और वह है डिजिटल कॉन्टेन्ट पर बढ़ता हुआ अविश्वास । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इसकी सक्षम तकनीकों के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हो रही है जहाँ लोग डिजिटल माध्यमों से प्राप्त जानकारी पर संदेह करने लगे हैं ।

यह लेख इस पर ध्यान केंद्रित करेगा कि कैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिजिटल सामग्री में अविश्वास उत्पन्न कर रहा है, और इसके दूरगामी प्रभाव समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था पर क्या हो सकते है। साथ ही हम इस विषय पर वास्तविक उदाहरणों और मामलों की भी चर्चा करेंगे, ताकि हम इस समस्या को बेहतर तरीके से समझ सकें ।

आर्टिफिशियल डिजिटल जानकारी : एक संबंध

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकें जैसे मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, और न्यूरल नेटवर्क्स ने डिजिटल कॉन्टेन्ट के सृजन और प्रसार में महत्व भूमिका निभाई है । इससे पहले जहाँ लोगों को जानकारी का स्रोत सत्यापित करने में कुछ समय लगता था, अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा बनाई गई सामग्री इतनी सटीक, प्रभावशाली और विश्वस्तरीय लगती हैं कि यह खुद एक भ्रम पैदा करती है । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की यह शक्ति डिजिटल सामग्री को और अधिक जटिल और धोखाधड़ी से भरपूर बना रही हैं ।

मशीन जनरेटेड कॉन्टेक्ट : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से बनाई गई इमेज या वीडियो इतनी वास्तविक होती हैं कि उसकी वास्तविकता पर बिल्कुल भी संदेह नहीं किया जा सकता है । एक उदाहरण है, जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग चुनावी प्रचार में किया गया और मशीन जनरेटेड कॉन्टेक्ट का उपयोग उम्मीदवारों के बारे में गलत सूचनाएं फैलाने के लिया किया गया । 2016 में अमेरीकी राष्ट्रपति चुनाव में “फेक न्यूज़” का प्रचार इस तथ्य का एक प्रमुख उदाहरण है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से नकली और भ्रामक जानकारी कैसे फैल सकती है और कैसे एक लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी को तोड़ सकती है ।

डीपफेक्स : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सबसे खतरनाक रूप है "डीपफेक्स"। यह तकनीक वीडियो और ऑडियो को इस प्रकार परिवर्तित करती हैं कि वे वास्तविक रूप में दिखाई देते हैं, लेकिन वास्तव में यह पुरी तरह से झूठ होते हैं। इस तकनीक के माध्यम से किसी व्यक्ति का चेहरा आवाज और शारीरिक हाव-भाव पूरी तरह से बदल दिए जाते हैं, जिससे यह महसूस होता है कि यह व्यक्ति सच में वह बात कह रहा है या कर रहा है। एक प्रसिद्ध उदाहरण 2018 में सामने आया जब एक वीडियो में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री "टेरेसा में" को एक बयान देते हुए दिखाया गया, जो पूरी तरह से झूठा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा परिवर्तित किया गया था। इस वीडियो को पहले तो बहुत से लोग वास्तविक मान बैठे थे, लेकिन बाद में यह स्पष्ट हुआ कि यह एक डीपफेक था। इस प्रकार की वीडियो सामग्री न केवल व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए खतरे का कारण बन सकती है, बल्कि यह वैश्विक अस्थिरता भी पैदा कर सकती है, क्योंकि लोग ऐसी सामग्री पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं जो वास्तव में अस्तित्व में ही नहीं होती ।

आइए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उत्पन्न होने वाले कुछ प्रमुख कारणों पर चर्चा करते हैं ।

1. **डेटा की शुद्धता पर संदेह** : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणालियां विभिन्न डेटा से इस पर आधारित होती है। अगर डेटा गलत, अधूरा या पक्षपाती है, तो परिणाम भी गलत होंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एल्गोरिदम को प्रशिक्षित करने में गलत डेटा का उपयोग कई बार भ्रामक और पक्षपाती जानकारी का कारण बन सकता है। उदाहरण के लिए, (अमेजॉन) के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणाली द्वारा नौकरी के आवेदन में किसी विशेष लिंग या जाति के लोगों को प्राथमिकता देने की खबर आयी थी। अगर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को सही तरीके से प्रशिक्षित नहीं किया गया, तो इससे समाज में गलत संदेश जा सकता है और सूचना पर विश्वास की कमी पैदा हो सकती है। इस प्रकार की घटनाओं ने कई क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की विश्वसनीयता पर सवाल उठाया है।

2. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गोपनीयता का उल्लंघन** : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक और बड़ा विवाद इस तथ्य से संबंधित है कि यह व्यक्तिगत डेटा एकत्र करता है और उसे ट्रैक करता है। सोशल मिडिया पर हर गतिविधि, खोज इतिहास, और यहाँ तक कि व्यक्तिगत आदतों का विश्लेषण किया जाता है। फेसबुक और कैंब्रिज एनलिटिका मामले में स्पष्ट रूप से दिखाया गया कि कैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से व्यक्तिगत डेटा का शोषण किया जा सकता है। फेसबुक ने लगभग 87 मिलियन युजर्स के व्यक्तिगत डेटा को बिना उनकी अनुमति के तीसरे पक्ष को बेचने की बात स्वीकार की थी। इस तरह की घटनाएं लोगों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अविश्वास करने पर मजबूर करती हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि उसकी व्यक्तिगत जानकारी को बिना उनकी अनुमति के एकत्रित किया जा रहा है और उनका गलत इस्तेमाल हो सकता है।

3. **एल्गोरिदम का पक्षपाती होना** : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को भारी मात्रा में प्रशिक्षित किया जाता है, और उस डेटा में सामाजिक पूर्वाग्रह अंतर्निहित होते है। नतीजतन, ये पूर्वाग्रह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एल्गोरिदम में अंतर्निहित हो सकते है, जो भर्ती, ऋण, आपराधिक न्याय और संसाधन आबंटन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुचित या भेदभावपूर्ण परिणामों को बनाए रखते हैं और बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई कंपनी नौकरी के आवेदकों के रिज्यूमें का विश्लेषण करके उनकी

स्क्रीनिंग करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम का उपयोग करती है, तो उस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम को कंपनी के भीतर सफल नियुक्तियों के ऐतिहासिक डेटा पर प्रशिक्षित किया गया होगा। हालाँकि, यदि ऐतिहासिक डेटा पक्षपाती है, जैसे कि लिंग या नस्लीय पूर्वागह शामिल हैं, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम उन पूर्वाग्रहों को सीख सकता है और उन्हें बनाए रख सकता है और इस प्रकार उन उम्मीदवारों के साथ भेदभाव कर सकता है जो कंपनी की पूर्व नियुक्तियों से मेल नहीं खाते है।

डिजिटल जानकारी में अविश्वास के प्रभाव : आइए अब डिजिटल जानकारी में अविश्वास के प्रभावों के बारे में चर्चा करते हैं।

1. **लोकतंत्र पर असर :** सोशल मिडिया पर फैलने वाली गलत जानकारी या "फेक न्यूज़" लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकती हैं। 2016 का अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव एक उदाहरण है, जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल गलत जानकारी फैलाने के लिए किया गया था। उस वर्ष के चुनावों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा समर्थित बॉट्स ने डोनाल्ड ट्रम्प के पक्ष में खबरे फैलाई, जो बाद में "फेक न्यूज़" के रूप सामने आई। इससे जनता में मतदाता व्यवहार पर असर पड़ा और लोगों का चुनावी प्रक्रिया पर विश्वास घटा। यही कारण है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा फैलाई गई गलत जानकारी लोकतंत्र की नींव को हिला सकती हैं और समाज में अविश्वास को जन्म दे सकती हैं।
2. **अर्थव्यवस्था पर असर :** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उत्पन्न गलत जानकारी का व्यापार जगत में भी प्रभाव पड़ सकता है । एक उदाहरण है जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को इस्तेमाल कर कंपनी के वित्तीय रिपोर्ट और उत्पाद की समीक्षाओं को बदल दिया गया । इससे निवेशकों को गलत दिशा में जानकारी मिलती है, जिससे शेयर बाजार में अस्थिरता पैदा हो सकती है । टेसला और इलोन मस्क के मामले में भी देखा गया है कि सोशल मिडिया पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा फैलाई गई अफवाहों ने कंपनी के स्टॉक्स में अस्थिरता पैदा की। जब उपभोक्ता, निवेशक या व्यापारिक निर्णयकर्ता इस प्रकार की जानकारी पर संदेह करना शुरू करते हैं, तो आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
3. **समाज में अविश्वास का बढ़ना :** जब लोग महसूस करते हैं कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जो जानकारी वे प्राप्त कर रहे है, वह या तो भ्रामक है या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा उत्पन्न की गई है, तो उनका भरोसा इन प्लेटफॉर्म पर कम हो जाता है । यह समाज में व्यापक अविश्वास का कारण बन सकता है। इस अविश्वास के कारण लोग उन तकनीकों और प्लेटफॉर्म को नकार सकते है, जिन पर वे पहले विश्वास करते थे। इससे समाज में असहमति और संघर्ष की स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं ।

डिजिटल जानकारी पर विश्वास बहाली के उपाय : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा उत्पन्न अविश्वास को दूर करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणालियाँ और एल्गोरिदम पारदर्शी होने चाहिए। यूजर्स को यह समझना चाहिए कि जानकारी कैसे उत्पन्न हो रही है और इसके स्रोत क्या हैं। इसके लिए डिजिटल सामग्री के सत्यापन के लिए तृतीय पक्ष प्रमाणन संस्थाओं का उपयोग किया जा सकता है। इसी कड़ी में एक और प्रयास किया जाना चाहिए कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास में नैतिक दृष्टिकोण को सुनिश्चित करें, ताकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणाली निष्पक्ष हो और लोगों का इसपर विश्वास बना रहे।

अनु गोपी बी,
लेखापरीक्षक

धरती का संकट

प्रकृति अब परेशान है, क्या कर रहें है हम ?
धरती माँ रो रही है, फिर भी क्यों चुप है हम ?
नदियाँ अब गंदी हो गई, हवा भी दूषित है,
पेड-पौधे सूख रहे हैं, सब कुछ संकट में है ।
पानी भी साफ नहीं, धुंआ भी बढ़ गया,
हमने ही तो सब खराब किया, फिर भी क्यों चुप हैं हम ?
समय है अब सोचने का, कुछ करना चाहिए,
प्राकृतिक संतुलन को बचाना चाहिए ।
आओ, मिलकर हम सब, प्रदूषण को हटाएंगे,
धरती को फिर से हरा-भरा बनाएंगे ?
हर एक इंसान को समझना होगा,
प्राकृतिक असंतुलन को अब रोकना होगा ।
चलो, कदम से कदम मिलाकर चलें,
धरती को फिर से सुंदर बनाएंगे हम ।
आओ, मिलकर कुछ ऐसा करें
कि फिर से धरती हरियाली से हरी-भरी हो जाए ।

अनिषमा विजयन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन का असीम चक्र: एक महान रचनात्मकता को बुनना

जीवन एक चक्र है—जन्म, जीवन और मृत्यु। कुछ नहीं से कुछ नहीं तक, हम अस्तित्व में जन्म लेते हैं, अपना जीवन जीते हैं और उस शून्य में लौट जाते हैं, जहाँ से हम आए थे। इसकी वास्तविकता सरल प्रतीत होती है, फिर भी यह गहरी अर्थवत्ता रखती है। जीवन के इस चक्र के भीतर एक बड़ा सत्य छिपा है: हर एक जीवन, हर एक आत्मा, जो इस दुनिया में जन्म लेती है, उसका एक उद्देश्य है। एक लक्ष्य जिसे पूरा करना है, एक कहानी जिसे बताना है।

जीवन की एक विशाल जिग्सॉ पहेली के रूप में कल्पना करें । यह एक टुकड़े से शुरू होती है, और दिन-ब-दिन, वह टुकड़ा अपनी सही जगह पहुँच जाता है । पहली नज़र में एक टुकड़ा महत्वहीन लग सकता है, जब तक बड़ी तस्वीर में इसका स्थान अस्पष्ट है । लेकिन जैसे-जैसे दिन बीततें हैं, पहेली धीरे-धीरे आकार लेने लगती है, और हम यह दिखने लगता हैं कि कैसे प्रत्येक टुकड़ा पूरे का एक अभिन्न हिस्सा है। यह पहेली सिर्फ व्यक्तिगत नहीं है, यह वैश्विक है। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक मनुष्य, अपने अनूठे टुकड़े का बड़े डिज़ाइन में योगदान देता है। साथ में, ये अरबों टुकड़े पृथ्वी पर जीवन की टेपेस्ट्री बनाते हैं, एक सुंदर और जटिल पहेली जो लगातार बुनी जा रही है। यह विचार "बटरफ्लाई इफेक्ट" से मिलता है: यह विचार कि छोटी क्रियाएँ विशाल, दूरगामी परिणाम उत्पन्न कर सकती हैं। ठीक वैसे जैसे किसी पहेली का एक टुकड़ा अंतिम चित्र को बदल सकता है, वैसे ही हर क्रिया, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, इतिहास के मार्ग को बदल सकती है। हम में से प्रत्येक, अपने चुनावों और क्रियाओं के साथ, इस दुनिया की सामूहिक कहानी में योगदान करता है। जो कुछ भी अलग-थलग लग सकता है, वह बड़े चित्र का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाता है।

इस विशाल पहेली में, हर एक इकाई मायने रखती है। हर आत्मा का एक उद्देश्य है। फिर भी, इस सत्य को भूलना आसान होता है जब हम अपनी व्यक्तिगत ज़िंदगी, हमारे दैनिक चुनावों और उन घटनाओं में उलझ जाते हैं जो हमें आकार देती हैं। यह सच है कि अधिकांश लोगों के लिए उनका अपना जीवन सबसे अधिक मायने रखता है। और यह पूरी तरह से सही है। हमारे व्यक्तिगत अनुभव, हमारी कठिनाइयाँ, और हमारी खुशियाँ हमारा केंद्र है। लेकिन यहाँ एक और गहरी बात है: यह समझना कि हम सभी आपस में जुड़े हुए हैं। हर चुनाव जो हम करते हैं, हर क्रिया जो हम करते हैं, जीवन की बड़ी कहानी को प्रभावित करती है।

इस महान रचनात्मकता की सुंदरता यह है कि यह "सही" काम करने या किसी विशिष्ट नैतिक कोड का पालन करने के बारे में नहीं है। सही और गलत, जैसा कि मानव मस्तिष्क द्वारा परिभाषित किया गया है, ब्रह्मांड के अंतिम रचनात्मकता के साथ मेल नहीं खा सकता है। समग्र योजना में, यह व्यक्तिगत चुनाव नहीं हैं जो मायने रखते हैं, बल्कि यह है कि प्रत्येक चुनाव बड़ी पहेली में कैसे फिट बैठता है। सुंदरता

जीवन के प्रवाह में है—कहानियों की बुनाई में, उन मोड़ों और घुमावों में जो एक साथ आकर कुछ असीम जटिल और सुंदर बनाते हैं। परिणाम, अपने पूरे रूप में, एक महान रचनात्मकता का एक आदर्श टुकड़ा है, एक कृति जो निरंतर खुलती रहती है।

इस प्रक्रिया को सुंदर बनाने वाली बात यह नहीं है कि यह सही या गलत है, बल्कि यह है कि जीवन लगातार उजागर होता रहता है, नए पैटर्न बनाता है। इस पहेली का कोई अंतिम छोर नहीं है—यह निरंतर, कभी विकसित होने वाला है। इस असीमित रचनात्मकता की शक्ति ही जीवन को असीमित बनाती है। यह एक शाश्वत यात्रा की सुंदरता है, जहाँ प्रत्येक टुकड़ा—हर जीवन—महत्वपूर्ण है और किसी एक व्यक्ति से बड़ी चीज़ में योगदान करता है, जिसे कोई भी समझ नहीं सकता ।

हममें से प्रत्येक के मूल में असीमता की शक्ति है। हम आत्माएँ परिवर्तन की क्षमता रखती हैं। हमारे पास अपनी ज़िन्दगी को आकार देने की ऊर्जा और क्षमता है, अपनी कहानी को अपनी शर्तों पर परिभाषित करने की। हमारे चुनावों पर सवाल उठाने के लिए कोई उच्च प्राधिकरण नहीं है। जबकि समाज नैतिक निर्णय थोप सकता है, जीवन के इस बड़े प्रयोग में, हर क्रिया—हर चुनाव—अंतिम रचनात्मकता का हिस्सा बन जाती है। सही या गलत, हर निर्णय अस्तित्व के ताने-बाने में बुना जाता है, एक बड़ा उद्देश्य पूरा करने में योगदान करता है।

यह केवल एक दार्शनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह हमारी शक्ति को पहचानने का आह्वान है। अपनी कहानी गढ़ने की क्षमता, चुनाव करने की शक्ति, हम सभी में है। और जब हम यह समझते हैं कि हम एक महान, असीमित रचनात्मकता का हिस्सा हैं, तो हम समझते हैं कि हमारे कार्य अकेले अस्तित्व नहीं रखते। वे एक बड़े पूरे का हिस्सा होते हैं, एक कहानी जो हर व्यक्ति, हर आत्मा के माध्यम से खुद को बुनती है।

जीवन की सुंदरता इस असीमित क्षमता में है—वह असीमित क्षमता जो हमें बढ़ने, बदलने और जोड़ने की शक्ति देती है। यह यात्रा को अपनाने के बारे में है, यह समझने के बारे में है कि हर कदम, हर पल, एक विशाल, जटिल पहेली का हिस्सा है जो निरंतर विकसित हो रही है।

हम सभी इस महान पहेली के टुकड़े हैं, और प्रत्येक का इस अस्तित्व की खुलती कहानी में महत्वपूर्ण योगदान है। साथ में, हम एक भविष्य बुनते हैं जो अपनी जटिलता में सुंदर है, और अपनी संभावनाओं में अनंत है। जीवन की कहानी कोई तय परिणाम नहीं है, बल्कि निरंतर रचनात्मकता की कहानी है। असीमता की शक्ति के माध्यम से, हम दुनिया को, टुकड़ा दर टुकड़ा, आकार देते हैं, अस्तित्व की बढ़ती हुई कृति में योगदान करते हैं।

अगिल पी के
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

घर वापसी

कोसों मील सफर करके, मेरी घर वापसी ।

इतिहास रचा हैं, मेरी घर वापसी ।

निकल पड़े थे,चंद दिनों के सफर पर ।

चाँद को पार करके, नासा का हिस्सा बनके ।

अखबारों में छा गई, मिशन की कामयाबी ।

सफल हुआ मेरा सफर, अंतरिक्ष का मेरा सफर ।

सफल कार्यकाल के पश्चात, घर वापसी की तैयारी ।

हफ्ते भर के मिशन के पश्चात, निकल पड़ी मैं धरती को चूमने ।

मगर अफसोस,

फसा डाला मुझे तकनीकी खराबी ने ।

रह गया मेरा सपना, कोसों मील दूर मेरे अपने ।

आकस्मिक संकट ने फसा डाला, मेरी सफर की तीसरी बारी को।

अंतरिक्ष पर कैद रखा, मुझे मेरे ज्ञान के संग।

मगर व्यस्त रही मैं, लाचारी के सामने घुटने टेकने के बजाय।

उपलब्ध सुविधाओं के जरिए, अपनी लाचारी को कामयाबी में बदला ।

कोशिशों में दिन बीता डाले, हिम्मत और चाहत साथ में लेकर ।

खोने नहीं दिया हौसला, उम्मीदों के संग ।

महीने नौ बीत गए, आठ दिन के बजाय ।

उम्मीदें नाकाम नहीं रही, दुआएं बेकार नहीं गई ।

विज्ञान की जीत हुई आखिर , घर वापसी हुई मेरी आखिर ।

साथी बुच विल्मोर के संग निकल पड़ी मैं धरती की और ।

खत्म हुई इंतजार की घड़ी, सहल हुआ केर सफर कोसों मील पार करके ।

आसमान को चीर कर, उतरी मैं धरती पर सहर्ष ।

समुंदर की लहरों की गोद में, संपन्न हुई मेरी घर वापसी ।

कोसों मिल सफर करके, मेरी घर वापसी ।

इतिहास रचा हैं, मेरी घर वापसी ।

अविनाश नाथ
लेखापरीक्षक

केरल के समुद्र तट

भारत को यदि विविधताओं की भूमि कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिमालय की बर्फ़ से लेकर थार के रेगिस्तान तक, ब्रह्मपुत्र की घाटियों से लेकर कच्छ के रण तक, हर क्षेत्र का अपना अद्वितीय स्वरूप है। इन्हीं में से एक है केरल – जिसे "गॉड्स ओन कंट्री" (ईश्वर का अपना देश) कहा जाता है। केरल केवल अपनी हरियाली, आयुर्वेद, बैकवाटर्स और कथकली जैसी नृत्यशैली के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहाँ के समुद्र तट भी विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

अरब सागर के किनारे बसा यह राज्य लगभग 590 किलोमीटर लंबी समुद्री तटरेखा रखता है। इस विस्तृत तटरेखा पर दर्जनों छोटे-बड़े समुद्र तट हैं, जिनमें कुछ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। ये न केवल प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से अद्वितीय हैं बल्कि केरल की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जीवनशैली का भी महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। केरल भारत के दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित है। इसके पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में पश्चिमी घाट की पर्वतमालाएँ हैं। समुद्र और पर्वतों के बीच की यह संकरी पट्टी जलवायु और पर्यावरण की दृष्टि से बहुत ही विशिष्ट है।

- अरब सागर के कारण यहाँ आर्द्र समुद्री जलवायु मिलती है।
- मानसून की हवाएँ सीधे तट से टकराती हैं, जिससे वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है।
- नारियल के वृक्ष, मछली पकड़ने वाली नावें, लालिमा लिए सूर्यास्त और रेत की सुनहरी चादर—ये सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

समुद्र तट केवल पर्यटकों के लिए नहीं हैं, बल्कि स्थानीय समाज की जीवनरेखा भी हैं। हजारों परिवार मछली पकड़ने, नारियल उत्पादों और पर्यटन उद्योग पर निर्भर हैं।

केरल के प्रमुख समुद्र तट

अब हम विस्तार से उन प्रमुख समुद्र तटों पर चर्चा करेंगे जिनकी वजह से केरल विश्व मानचित्र पर खास पहचान रखता है।

1. कोवलम तट – तैरती लहरों का शहर

त्रिवेंद्रम से कुछ ही दूरी पर स्थित कोवलम बीच शायद केरल का सबसे प्रसिद्ध समुद्र तट है। इसकी तीन खाड़ियाँ—लाइटहाउस, हवा और समुद्र बीच—मानो तीन बहनें हों जो अलग-अलग स्वभाव की हों लेकिन साथ मिलकर एक ही परिवार का हिस्सा हों। लाइटहाउस बीच का नाम यहाँ बने विशाल लाल-सफेद टॉवर के कारण पड़ा है। जब रात को यह प्रकाश फैलाता है, तो लगता है जैसे समुद्र स्वयं अपनी आँखें खोलकर नाविकों का मार्गदर्शन कर रहा हो। पर्यटक यहाँ सनबाथ लेते हैं, बच्चे रेत के किले बनाते हैं और स्थानीय मछुआरे अपनी नावों के साथ लौटते हैं। शाम के समय, जब नारियल के पेड़ों के बीच से सूर्य डूबता है, तो वातावरण मानो किसी चित्रकार की कैनवास पर जीवित हो उठता है।

2. वर्कला तट – पापों से मुक्ति का स्थान

वर्कला बीच केवल एक पर्यटक स्थल नहीं बल्कि आध्यात्मिक महत्व भी रखता है। यहाँ का पापनासम बीच लोगों की आस्था का केंद्र है। मान्यता है कि यहाँ स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। इस तट की सबसे अनोखी विशेषता है यहाँ की क्लिफ़ (चट्टानें), जो सीधे समुद्र से मिलती हैं। ये चट्टानें भूगर्भीय दृष्टि से भी दुर्लभ हैं। पर्यटक अक्सर यहाँ बैठकर घंटों समुद्र की लहरों को टकराते हुए देखते हैं और मन में शांति का अनुभव करते हैं। कहा जाता है कि एक बार एक सन्यासी यहाँ ध्यान में लीन थे। समुद्र की लहरों की आवाज़ ने उन्हें इतनी गहन शांति दी कि उन्होंने यहाँ एक आश्रम की स्थापना की। आज भी वहाँ साधु-संत ध्यान करते दिख जाते हैं।

3. बेकल तट – इतिहास और रोमांस का संगम

उत्तर केरल के कासरगोड जिले में स्थित बेकल बीच अपनी ऐतिहासिकता के लिए जाना जाता है। यहाँ बना बेकल किला समुद्र के किनारे खड़ा है। इसकी दीवारों पर चढ़कर जब कोई समुद्र को देखता है तो लगता है मानो समय थम गया हो। फ़िल्म "बॉम्बे" का मशहूर गाना "तू ही रे..." यहीं फ़िल्माया गया था। आज भी कई पर्यटक यहाँ बैठकर गिटार बजाते हुए गाते हैं, और समुद्र की लहरें उनकी धुनों के साथ ताल मिलाती हैं।

4. चेराई तट – डॉल्फ़िन की छलाँगें

कोच्चि के पास स्थित चेराई बीच शांत और सुरक्षित माना जाता है। यहाँ की सबसे बड़ी खासियत है कि कभी-कभी डॉल्फ़िन तैरते हुए दिख जाती हैं। बच्चे और परिवार इस बीच पर घंटों खेलते रहते हैं। यहाँ समुद्र और बैकवाटर्स दोनों का संगम देखने को मिलता है। एक तरफ लहरें, दूसरी तरफ शांत जल—मानो जीवन का संतुलन यहीं मिल जाता है।

5. आलप्पुऴा तट – पूर्व का वेनिस

आलप्पुऴा, जिसे अल्लेप्पी भी कहते हैं, अपने बैकवाटर्स और हाउसबोट्स के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यहाँ का आलप्पुऴा बीच भी कम आकर्षक नहीं। यहाँ का पुराना सी पियर (समुद्र में जाती लकड़ी की संरचना) आज भले ही खंडहर है, पर यह औपनिवेशिक काल की गवाही देता है। यहाँ अक्सर सांस्कृतिक उत्सव और नाव दौड़ प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

6. काप्पाड तट – इतिहास का पहला कदम

कोषिकोड़ का काप्पाड बीच इतिहास में दर्ज है। 1498 में यहीं वास्को-दा-गामा आया था। समुद्र के किनारे खड़े होकर जब हम यह सोचते हैं कि यहीं से भारत और यूरोप के संबंधों का नया अध्याय शुरू हुआ था, तो रोमांच हो उठता है।

7. पय्यमबलम और मारारी तट

पय्यमबलम अपनी लंबी रेत और शांति के लिए मशहूर है। यहाँ शोरगुल कम और सुकून ज़्यादा मिलता है। मारारी बीच पर आपको गाँव की झलक मिलेगी। मछुआरे अपनी नावों से लौटते हैं, और महिलाएँ किनारे पर बैठकर जाल बुनती हैं। यह असली केरल का स्वाद देता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व

केरल के समुद्र तट केवल प्राकृतिक सुंदरता नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन के केंद्र भी हैं।

1. **मछुआरे समाज** – यहाँ हजारों परिवार पीढ़ियों से समुद्र से मछली पकड़कर जीवन यापन करते हैं।
2. **त्योहार और मेलों का आयोजन** – कई समुद्र तटों पर स्थानीय मेले और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।
3. **आध्यात्मिक महत्व** – वर्कला का "पापनासम" या काप्पाड का ऐतिहासिक संदर्भ लोगों की आस्था से जुड़ा हुआ है।
4. **फिल्मों और साहित्य में स्थान** – कोवळम और बेकल बीच पर कई हिंदी-तमिल फिल्मों की शूटिंग हुई है।

पर्यटन अनुभव

केरल के समुद्र तटों का अनुभव केवल रेत और लहरों तक सीमित नहीं है।

- **आयुर्वेदिक थेरेपी**: कई बीचों पर रिसॉर्ट्स आयुर्वेदिक मसाज और थेरेपी देते हैं।
- **जलक्रीड़ा**: सर्फिंग, स्कूबा डाइविंग, पैरासेलिंग आदि।
- **स्थानीय व्यंजन**: मछली, झींगे, नारियल आधारित व्यंजन।
- **हाउसबोट यात्रा**: आलप्पुऴा और कुमरकम में बैकवाटर्स का अनोखा आनंद।

चुनौतियाँ

1. **प्रदूषण और प्लास्टिक कचरा** – पर्यटन के कारण बढ़ती गंदगी।
2. **तटीय अपरदन** – लहरों के कारण तट का क्षरण।
3. **अत्यधिक व्यावसायीकरण** – प्राकृतिक सुंदरता पर खतरा।
4. **पर्यावरणीय संकट** – समुद्र स्तर में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन।

केरल के समुद्र तट केवल भूगोल का हिस्सा नहीं, बल्कि यह कहानियों, इतिहास, आस्था और संस्कृति का संगम हैं। यहाँ आने वाला हर यात्री कुछ न कुछ नया अनुभव करता है—कभी आध्यात्मिक शांति, कभी रोमांच, कभी स्वादिष्ट व्यंजन, तो कभी लोक कला का आनंद ।

आज ज़रूरत है कि हम इन तटों को केवल "घूमने की जगह" न मानें, बल्कि इन्हें अपनी धरोहर की तरह सहेजें। तभी आने वाली पीढ़ियाँ भी वही आनंद उठा पाएँगी, जो आज हम ले रहे हैं।

रितेश कुमार शर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

‘भिखारी’

एक रोटी की तलाश में,
निकल पड़ा है, ‘भिखारी’
कभी इस गली, कभी उस गली,
कभी इस चौखट, तो, कभी उस मरघट,
कभी चिलचिलाती धूप में,
कभी सुनसान सड़कों पर,
एक हाथ में लिए कटोरा
और एक हाथ में खाली बोरा,
पैरों पर लिए पेट का बोझ
चल पड़ा है, ‘भिखारी’

एक रोटी की तलाश में,
निकल पड़ा है, ‘भिखारी’
मैले – कुचैले कपड़ों में
किसी तरह ढकता अपने तन को,
दुबला-पतला नीरीह सा,
लगता है जैसे निर्जीव सा,
पर चल रहा है, वो पथ पर
मेडियों पर, पगडंडियों पर,
मोह माया से अंजान,
तेरी मोह-माया की बस्तियों में,

एक रोटी की तलाश में,
निकल पड़ा है, ‘भिखारी’
एक हाथ हरदम फैलाए,
कर रहा वो सबके आगे
कोई एक पैसे रख दे तो,
दिल पुलकित उसका हो जाता
कोई ना दे तो, कोई बात नहीं,
पर कोई जो दे, दे
उसको ईश्वर समझ जाता,
फिर ईश्वर का नाम लेकर,
थोड़ा सा विश्वास लेकर,
चल पड़ा है “भिखारी”

एक रोटी की तलाश में, निकल पड़ा है, ‘भिखारी’।

संध्या पी वी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कल्पनाओं में रहने वाला

चूंकि हमें सुबह परिवार के साथ यात्रा पर जाना था, इसलिए हमने सोचा कि सारा काम खत्म करके जल्दी सो जाएँ। लेकिन जब सारा काम पूरा हो गया, तब लगभग बारह बज चुके थे। मैं लक्ष्मी और गौरी के साथ एक कमरे में सोया। लक्ष्मी ने खिड़की खुली छोड़ दी थी क्योंकि बहुत गर्मी थी। डर के कारण मैंने उससे कहा कि हम खिड़की बंद करके लेट सकते हैं। लेकिन उसने हल्की सी मुस्कान के साथ मुझसे कहा, "इस दूसरी मंजिल पर कोई भूत नहीं आएगा। "यधपि मैंने हाँ कह दिया, फिर भी कहीं से भूत का डर मेरे अंदर घुस आया। जल्द ही हम तीनों सो गये।

लेकिन कुछ देर बाद, जैसे ही नींद की देवी मेरी पलकें सहलाने लगी, दरवाजे पर दस्तक हुई, 'टक टक'। मैंने धीरे से अपनी आँखें खोली और देखा। कमरे में इतना अंधेरा था कि मैं कुछ भी साफ नहीं देख पाया। अचानक मेरी नजर आधे खुले दरवाजे पर गई, लेकिन वह सुनसान था। तभी मेरी नजर धीरे-धीरे खुलती खिड़की पर गयी। अचानक मुझे झटका लगा। खिड़की के पास एक आकृति की तरह कुछ था। तब तक डर और चिंता के कारण मेरी सारी नींद उड़ चुकी थी। जब मुझे समय और स्थान का बोध पुनः हुआ मुझे तब समझ आया। रात के सन्नाटे में पड़ोसी के आँगन में खड़े केले और नारियल के पेड़ हल्की हवा का स्वागत करने के लिए खुशी से सिर हिला रहे थे। मेरा घबराया हुआ चेहरा देखकर, केले ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराया, शायद यह कहते हुए कि, "ओह ओह"। मैंने लक्ष्मी और गौरी की ओर देखा और सोचा कि क्या किसी ने यह देखा। मेरी किस्मत। दोनों गहरी नींद में थी और उन्हें कुछ भी पता नहीं था। मैं वापस सो गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। करीब एक घंटे बाद वही आवाज फिर आई। मैंने आँखें खोलीं और भयभीत होकर देखा। मैंने बिस्तर से गिरी हुई चादर उठाई और उसे अपने सिर तक ओढ़ लिया। साहस जुटाकर धीरे से अपना सिर उठाया और छोटी सी दरार से खिड़की और दीवारों की ओर देखा।लक्ष्मी और गौरी इतनी गहरी नींद में सोते हैं कि उन्हें लगता कि यह आवाज लोरी की है।

मैं कुछ देर तक चुपचाप लेटा रहा, उस आवाज को सुनता रहा। तभी मुझे एहसास हुआ कि मैंने फिर गलती कर दी है। वह आवाज और कुछ नहीं थी। यह पंखे की हवा के कारण पर्दे के दीवार से रगड़ खाने की आवाज थी। इस बार पर्दा मुझ पर नहीं हँसा। इसके बजाय मैं मुस्कुराया और वापस सोने चला गया ।

अनिल कुमार. के ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मिलन

सोनजुही की सुंदर छाया में
सो रही थी विरहिणी कोकिला
डूब रही थी रंगीन सपने में
मिलन अपने प्रिय के संग ।।

झट से बदला पवन का भाव
झूम उठी पेड की डालियाँ
चौंक उठी कोकिला एकाएक
देखने लगी चारों ओर डरसे ।।

बारिश आने लगी चम चम से
साथ ही आई बिजली की चमकाई
सूर धनु भी दिखाई पड़ी नभ में
मेघगर्जन की ध्वनि भी सुनाई ।।

भीगने लगी कोकिला की तन
जागने लगी मन की कामनाएँ
कूकने लगी मनमोहन सुर में
अपने प्रिय को ढूँढने की तरह

ढलने लगा सूरज पश्चिम में
लालिमा छा गई चारों ओर
सोनजुही की सुनहला रंग
धरा पर चटाई बिछाने लगी ।।

प्रेमिका की मीठी बोली सुन
दूर से आया प्रिय
सूरज की धुँधली आया में
मिलन हो गया दोनों की ।।

पुलकित हो गया धारा भी
उस पवित्र मिलन की खुशी में
सायं संध्या भी आँखें मूँदकर
मंगल गीत गूँजने लगी ।।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पुरस्कार, 2024

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू , भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक से राज्य लेखापरीक्षा कार्यालयों में 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ कार्यालय' का पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पुरस्कार, 2024

राज्य लेखा परीक्षा कार्यालयों की श्रेणी में
वर्ष का सर्वश्रेष्ठ कार्यालय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I), केरल
को
ऑडिट दिवस पर पुरस्कृत किया गया

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL'S AWARD, 2024
for
Office of the Year
Presented on *Audit Diwas*
in the category of State Audit Offices
to
Office of the Principal Accountant General (Audit - I), Kerala

New Delhi
Date: November 16, 2024

Girish Chandra Murmu
Comptroller and Auditor General of India

महालेखाकार एवं अन्य अधिकारीगण प्रमाण-पत्र के साथ

लेखापरीक्षा दिवस 2024

नि.म.ले.प. की संस्था का एक लंबा और शानदार इतिहास रहा है और संस्था की ऐतिहासिक शुरुआत और सुशासन, पारदर्शिता व जवाबदेही के प्रति इसके योगदान को स्मरण करने के लिए, हर साल 16 नवंबर को लेखापरीक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। परंपरा को जारी रखते हुए, नि म ले प के संगठन ने 16 नवंबर 2024 को चौथा लेखापरीक्षा दिवस मनाया। केरल में सभी क्षेत्रीय कार्यालयों ने संयुक्त रूप से लेखापरीक्षा सप्ताह 2024 मनाया।

समारोह 04/10/2024 को राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता 2024 के साथ शुरू हुआ। महालेखाकार का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम उपरोक्त प्रतियोगिता के केंद्रों में से एक था। यह प्रतियोगिता उन सभी कॉलेज के छात्रों के लिए खुली थी जो वर्तमान में भारत में किसी भी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी संस्थान में अध्ययन के पाठ्यक्रम में नामांकित हैं और जिनकी आयु 23 वर्ष से अधिक नहीं हैं। यह प्रतियोगिता कार्यालय के ओआरओपी हॉल में आयोजित की गई थी और प्रतियोगिता में कुल 36 छात्रों ने भाग लिया था। विजेताओं को लेखापरीक्षा दिवस के दौरान, अर्थात 16 नवंबर 2024, नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

14/11/2024 को राजगिरी बिजनेस स्कूल, काक्कनाड, कोच्चि में एक आउटरीच गतिविधि के रूप में एक सम्पूर्ण केरल अंतर-कॉलेजीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 'क्यूरियस 2024' आयोजित की गई थी। प्रश्नोत्तरी क्यू फैक्ट्री, केरल की पहली पेशेवर प्रश्नोत्तरी इकाई द्वारा तैयार की गई थी जो केरल सरकार, बैंकों आदि के विभागों/स्वायत्त निकायों के लिए विभिन्न प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों का आयोजन करती है। प्रश्नोत्तरी मास्टर श्री स्नेहज श्रीनिवास थे, जिन्हें व्यापक रूप से 'केरल का क्विज मैन' के रूप में मान्यता प्राप्त है । इस कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न कॉलेजों की 50 से अधिक टीमें शामिल हुई। इसके अलावा 18/11/2024 से 20/11/2024 तक मुख्य कार्यालय के ओआरओपी हॉल में कर्मचारियों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। लेखापरीक्षक कर्मचारियों के लिए 'केरल में पर्यावरण की स्थिति –अवस्था, चुनौतियां और आगे बढ़ना, केरल में बाढ़ की तैयारी और प्रतिक्रिया और आईटी प्रणालियों की लेखापरीक्षा' और ले व ह के कर्मचारियों के लिए 'साइबर स्वच्छता और आईटी प्रणालियों की सुरक्षा' जैसे विषय थे ।

उपरोक्त के अलावा, विभिन्न प्रतियोगिताओं, जैसे, कर्मचारियों के लिए अंतर-कार्यालय वाद-विवाद, रंगोली प्रतियोगिता, डम्ब शराड्स, एक मिनट बातचीत और फोटोग्राफी प्रतियोगिता और उनके बच्चों के लिए मुख्य कार्यालय और शाखा कार्यालयों में चित्रकारी और भाषण प्रतियोगिता की व्यवस्था की गई थी ।

लेखापरीक्षा सप्ताह 2024 का समापन समारोह 22 नवंबर 2024 को सुबह 10.00 बजे ओआरओपी हॉल में आयोजित किया गया और सुश्री शारदा मुरलीधरन, आईएएस, मुख्य सचिव, केरल सरकार इस समारोह की मुख्य अतिथि रही। सुश्री अतुर्वा सिन्हा, भा. ले प. एवं ले. से. महालेखाकार (ले व ह) और सुश्री प्रीति अब्राहम, भा. ले प. एवं ले. से. महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने दर्शकों को संबोधित किया। मुख्य सचिव ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

कार्यक्रम का समापन कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम (वाद्य संलय, संगीत) के साथ हुआ।

मुख्य अतिथि सुश्री शारदा मुरलीधरन, आईएएस, मुख्य सचिव, केरल सरकार के साथ सुश्री अतुर्वा सिन्हा, भा. ले प. एवं ले. से. महालेखाकार (ले व ह) और सुश्री प्रीति अब्राहम, भा. ले प. एवं ले. से. महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

सुश्री शारदा मुरलीधरन, आईएएस, मुख्य सचिव द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण ।

आकांशा गहलोत
कनिष्ठ अनुवादक

छोटा सा सहारा

25 वर्षीय संगीता बैंगलोर के एक व्यस्त कॉल सेंटर में काम करती है। वह बातुनी नहीं है । वह अंतर्मुखी, शांत और प्रकृति से प्यार करने वाली है, लेकिन उसका मन में हमेशा कुछ चलता रहता है। वह बहुत सोचती है, जिससे कभी-कभी उसे घबराहट और अकेलापन महसूस होता है। वह सोशल मीडिया पर दिखावे वाली खुशियों में विश्वास नहीं करती । वह बस एक सरल और शांति भरी जिंदगी चाहती है। उसे अकेले रहना पसंद है, लेकिन कभी-कभी यह अकेलापन उसे दुखी भी कर देता है। अपने दोस्तों और परिवार के बीच रहने के बाद भी, वह खुद को कभी-कभी अलग महसूस करती है। गहरे जुड़ाव की कमी उसे हमेशा महसूस होती है। यही उसकी ज़िंदगी है — शांत लेकिन जटिल, और छोटी-छोटी उम्मीदों से भरी ।

संगीता शहर के बाहर किराए के एक मकान में रहती है, जहां वह तीन लड़कियों के साथ रहती है । उसे यह शहर बहुत व्यस्त और शोर-शराबे वाला लगता है—ऐसा लगता है जैसे यहाँ कोई भी सुख-चैन से नहीं रहता । उसका छोटा सा कमरा ही उसका एक शांत ठिकाना है, जहाँ वह खुद को सुरक्षित महसूस करती है और थोड़ा आराम कर पाती है, इससे पहले कि रोज़ की भाग-दौड़ फिर शुरू हो।

एक शाम, जब संगीता ऑफिस के बाद बस से उतरकर घर की तरफ जा रही होती है, तो उसकी चाल अचानक धीमी हो जाती है। कुछ उसे उसके मन की उधेड़ बुन से बाहर खींच लेता है। वह रुकती है और अपने चारों तरफ देखती है। उसे एहसास होता है कि वह अकेली नहीं है। वह पीछे मुड़ती है और देखती है कि कुछ कदम पीछे, एक छोटा भूरा और दुबला-पतला पिल्ला अपनी बड़ी-बड़ी मासूम आँखों से उसे पूंछ हिलाते हुए देख रहा है।

पिल्ला बहुत कमजोर और मिट्टी में सना हुआ था । संगीता पिल्ले को देखने के लिए पंजों के बल नीचे बैठी । पिल्ला हिला नहीं, बस वहीं बैठा रहा और अपनी आँखों से संगीत को देखता रहा । संगीता ने इधर-उधर देखा की शायद कहीं उसकी माँ या बाकी पिल्लें हों तो वो उसे वहाँ छोड़ सके पर उसे कोई और कुत्ता या पिल्ला नहीं दिखा, फिर धीरे से पिल्ले की तरफ देख के बोली, "हेलो, छोटू , तुम्हारी माँ कहाँ है?" पिल्ला शांती से बैठा रहा, उसकी चमकती आँखें और हिलती हुई पूँछ बता रही थी कि उसे संगीत से कोई डर नहीं लग रहा था । धीरे-धीरे संगीता ने उसे अपने पीछे बुलाया। पिल्ला खुशी खुशी उसके साथ चलने लगा मानो उस मुलाकात ने दोनों का अकेलापन खत्म कर दिया हों ।

संगीता रास्ते में एक किराने की दुकान पर रुकती है और पिल्ले के लिए बिस्कुट खरीदती है। वह दुकानदार से पिल्ले के बारे में पूछती है। दुकानदार बताता है कि पिल्ले की एक माँ थी और वह तीन और पिल्लों के साथ था, लेकिन एक हफ्ते पहले एक कार ने माँ और बाकी तीन पिल्लों को सड़क पार करते

समय टक्कर मार दी थी और अब वह पिल्ला अकेला बच गया है । पिल्ले के बारे में सुनकर संगीता की आँखों में आंसू आ जाते हैं । वह पूछती है, "पिल्ला कहाँ रहता है?" दुकानदार सड़क के उस पार झाड़ियों के नीचे रखे एक गत्ते के डिब्बे की ओर इशारा करता है और कहता है, “एसी सर्दी में इसका बचना मुश्किल है ।"संगीता मदद करना चाहती है, लेकिन उसके घर में पालतू जानवर रखने की अनुमति नहीं है और वह अपना ज्यादा समय ऑफिस में बिताती है । उसे कोई रास्ता नहीं सूझता ।

संगीता पिल्ले को बाकी बिस्कुटों के साथ वहीं छोड़ देती है और अपने मकान लौट आती है, अपनी रोज़ की ज़िंदगी और परेशानियों में खो जाती है। पिल्ला उसके दिमाग से कुछ समय के लिए निकल जाता है। लेकिन अगले दिन ऑफिस जाते समय और ऑफिस से लौटते समय वह फिर से पिल्ले को देखती है, उसके लिए बिस्कुट खरीदती है, उसे खिलाती है, थोड़ी देर उसके साथ खेलती है, और फिर चली जाती है।

आगे आने वाले कुछ दिनों में पिल्ला, जिसे संगीता “छोटू” नाम देती है, जो अब एक साथी जैसा हो गया है। वह उसके साथ खेलती हैं, बैठती और कभी-कभी चुप हो जाती है, किसी सोच में डूब जाती है । छोटू भी उसके पास बैठा रहता है । कभी उसे परेशान नहीं करता; वह बस उसके साथ होता है और उसे यह एहसास दिलाता है कि वह अकेली नहीं है।

यह सिलसिला एक हफ्ते तक चलता रहता है फिर सप्ताहांत आता है और संगीता अपने मकान में ही काम करते हुए सारा समय बिता देती है बाहर नहीं जाती। रविवार की रात बहुत तेज बारिश होती है, जिससे उसे छोटू की चिंता सताने लगती है।

अगले दिन सोमवार को, ऑफिस जाते और लौटते हुए, वह छोटू को ढूँढ़ती है, लेकिन वह उसे कहीं नहीं दिखता। वह दुकानदार से पूछती है, तो वह कहता है, "मैंने शनिवार से उसे नहीं देखा। मुझे लगता है वह चला गया है। "

घबराई हुई संगीता सड़क पार करके उस झाड़ी के पास पहुंचती है जहाँ छोटू सोता था। वहाँ पहुँच के देखती है कि छोटू गीले गत्ते के डिब्बे में कांपता हुआ सिकुड़ के बैठा है। वह संगीत को अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से देखता है पर उसकी आँखों मे वो चमक नहीं थी और न ही उसके शरीर मे पूंछ हिलाने की जान थी। छोटू पहले से भी ज्यादा कमजोर लग रहा था। यह देख कर संगीता की दिल भारी हों गया। बिना किसी हिचकिचाहट के, वह उसे अपने दुपट्टे में लपेटती है और उठा के सीधा घर ले आती है।

संगीता छोटू को चुपचाप अपने कमरे में ले आती है। वह उसे कपड़े से पोंछ कर उसका शरीर सुखाती है और खाना खिलाने की कोशिश करती है, लेकिन छोटू कुछ भी नहीं खाता-पीता। संगीता को चिंता होने लगती है। अगले दिन संगीता उसे पशु चिकित्सक के पास ले जाती है। डॉक्टर बताते हैं कि छोटू को सर्दी लग गई है और उसे दिन में दो बार इंजेक्शन और ड्रिप चढ़ानी पड़ेगी।

संगीता छोटू की देखभाल के लिए ऑफिस से छुट्टी ले लेती है और दिन-रात उसके पास रहती है। दो दिन के इलाज के बाद, छोटू की पूँछ फिर से हिलने लगती है। छोटू उसकी ओर ऐसे देखता है जैसे वह उसे बचाने के लिए धन्यवाद दे रहा हो।

संगीता, छोटू को पालने का फैसला कर लेती है और अपने लिए रहने की नई जगह ढूंढने लगती है । यह उसके लिए बड़ा बदलाव था, लेकिन छोटू के लिए वह इसके लिए भी तैयार थी । छोटू के ठीक होने के बाद फिर से ऑफिस जाने का वक्त आ गया था । वह भारी मन से पिल्ले को अपने कमरे में सुरक्षित छोड़कर चली जाती है। उसे लगा था कि वापस लौटने तक उसके साथ रहने वाली बाकी लड़कियों या मकान मालिक को छोटू के बारे में पता चल जाएगा और खूब हंगामा होगा पर घर पहुंचते ही देखा की एकदम शांति थी सब अपने-अपने काम में व्यस्त थीं, वह अपने कमरे में जाती है तो देखती है की छोटू चुप छाप बिस्तर पे चढ़ कर बॉल से खेल रहा है। यह देख के उसकी जान में जान आती है ।

एक दिन ऑफिस में सहकर्मियों से बात करते हुए उसने छोटू को पालने और नए घर की तलाश के बारे में बताया । उनमें से एक ने पास में एक ऐसी जगह बताई जहाँ पालतू जानवर रखने की इजाजत थी और किराया भी सही था ।

संगीता बिना समय गवाए छोटू के साथ नए घर में आ जाती है । उसे एस महसूस होता है की छोटू के आने के बाद उसका सारा समय हस्ते खेलते बीतता है जिसकी वजह से वह ज्यादा खुश और सेहतमंद महसूस कर रही है ।

एक महीने बाद, उसे एक अच्छी नौकरी और बेहतर वेतन का अवसर मिलता है साथ ही घर से काम करने का विकल्प भी। चीजे आपने आप सही होती चली जाती है। उसे समझ आता है कि उसने छोटू को नहीं बचाया, बल्कि छोटू ने उसे बचाया था।

हर सुबह संगीता उठती है और छोटू को उसे घूरते हुए पाती है, उसकी आँखों में एक चिंता होती । वह हर सुबह उससे प्यार से पूछती है, "तुम्हें भगवान ने भेजा है ना?"। छोटू अपनी पूँछ हिलाता मानो जैसे हाँ में जवाब दे रहा हो । संगीता धीरे-धीरे मुस्कुराती है और स्नेह से उसे गले लगा लेती, ऐसा स्नेह जो उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था।

अचानक, संगीता को अपना घर पूरा लगने लगता है। हर रात, जब संगीता अपने बिस्तर पर बैठती है, छोटू उछलकर उसके पास आकर उसके पास दुबक जाता है। वह फुसफुसाते हुए कहती है, "तुम बहुत प्यारे हो !," और छोटू के सिर पर प्यार से एक चुंबन देती है। छोटू प्यार से संगीता की गोद में चढ़के उसका मुँह चाटने लगता।

पहली बार, संगीता को वह अकेलापन महसूस नहीं हो रहा था जो उसे हमेशा होता था। वह जो भी करती छोटू को अपने पास पाती; खाना बनाते समय, खाना खाते समय , घर का काम करते समय। वो साये की तरह संगीत के साथ रहता जैसे मानो वो संगीता को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने देना चाहता जिससे संगीता को कोई परेशानी नहीं थी। अब घर में अकेलेपन के सन्नाटे की जगह साथ के मिठास ने ले ली थी ।

छोटू उसके जीवन में उस वक्त आया है, जब उसे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी।

धीरे-धीरे, संगीता की दुनिया बदलने लगी । वह खुद को छोटू से बातें करते हुए पाती , बिना किसी डर के वह अपने मन की बातें उसे कहती है । छोटू न तो उसे कोई सलाह देता है, न ही किसी समस्या का

हल सुझाता है। वह बस वहीं बैठा रहता है, अपनी प्यार भरी और मासूम आँखों से उसे देखता रहता है । और तभी संगीता को एहसास होता है कि यही उसके लिए सबसे बड़ा सहारा है ।

छोटू के साथ ने संगीता के दिल का खालीपन भर दिया । वह बदले में कुछ भी नहीं माँगता, बस उसे प्यार और साथ देता रहता है। उसका प्यार बिना शर्त, सच्चा और सरल है, ऐसा प्यार जो संगीता को पहले पता भी नहीं था कि उसे चाहिए ।

महीने गुजरते गए, और संगीता मजबूती से जीवन में आगे बढ़ती है। वह अंधेरा जो कभी उसे घेरता था, अब वह छोटु की वजह से थोड़ा कम हो गया है — जो बिलकुल सही वक्त पर उसकी ज़िंदगी में आया।

संगीता सीखती है कि प्यार कई तरह से आता है, और कभी-कभी घाव भरना कोई बड़ा चमत्कार नहीं होता, बल्कि किसी की मौजूदगी होती है—भले ही उसके चार पैर और एक पूँछ हों ।

और इस तरह, वे दोनों साथ में ज़िंदगी में आगे बढ़ते हैं — दो आत्माएँ जो एक-दूसरे में सुकून पाती हैं, उनका रिश्ता अनकहा लेकिन गहरा है।

स्वतंत्रता दिवस

श्री विष्णुकान्त पी बी , महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) द्वारा ध्वजारोहण ।

राधिका अनीष
वरिष्ठ अनुवादक

स्वर कोकिला लता मंगेशकर: एक युग की अनश्वर ध्वनि

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में यदि किसी एक नाम को अमरत्व का दर्ज़ा प्राप्त है, तो वह है लता मंगेशकर। उन्हें केवल एक गायिका कहना अन्याय होगा; वे हमारे देश की आत्मा की आवाज़ थीं। उनकी गायकी ने केवल संगीत नहीं रचा, बल्कि पीढ़ियों की भावनाओं को स्वर दिया। वे उस भारत का प्रतीक बनीं, जहाँ संगीत, संस्कृति और संवेदनाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

प्रारंभिक जीवन और संघर्ष

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर 1929 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में हुआ। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर एक सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक और नाट्यकर्मी थे। घर में बचपन से ही संगीत का वातावरण था, और यही वातावरण लता जी की आत्मा में रच-बस गया। लता जी का नाम जन्म के समय "हेमा" रखा गया था, किंतु बाद में उनके पिता ने अपने नाटकों में से एक पात्र "लतिका" के नाम पर उन्हें लता कहना शुरू किया।

लेकिन उनका बचपन सामान्य नहीं रहा। जब लता जी केवल 13 वर्ष की थीं, तभी उनके पिता का आकस्मिक निधन हो गया। यह उनके जीवन का सबसे कठिन मोड़ था। परिवार की ज़िम्मेदारी अचानक उनके कंधों पर आ गई। पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने के कारण उन्होंने छोटी उम्र में ही घर की जिम्मेदारियाँ संभालीं। आर्थिक स्थिति भी कठिन थी, परंतु इस कठिनाई ने उन्हें तोड़ा नहीं बल्कि और मजबूत बना दिया।

लता जी ने अपने पिता से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा पाई थी। पिता के निधन के बाद उस्ताद अमान अली खान और बाद में उस्ताद अमानत अली खान जैसे गुरुजनों ने उनकी प्रतिभा को तराशा। उन्होंने बहुत छोटी उम्र से फिल्मों में अभिनय और गायन शुरू किया, ताकि परिवार का भरण-पोषण हो सके। उनकी पहली मराठी फिल्म "कीर्ति हसाल" (1942) में उन्होंने अभिनय किया और फिर धीरे-धीरे गायकी की ओर पूरी तरह मुड़ गई।

संगीत यात्रा

1940 के दशक के अंत में उन्होंने हिंदी फिल्मों में कदम रखा और जल्द ही उनकी पहचान बनने लगी। लता मंगेशकर का सफ़र छह दशकों से भी अधिक लम्बा रहा जो भारतीय फ़िल्म संगीत का एक स्वर्णिम अध्याय बन गया। उनकी आवाज़ में ऐसी अद्भुत मिठास थी कि श्रोता स्वयं को भावनाओं के प्रवाह में बहा हुआ पाते। चाहे वह रूमानी गीत हों, भक्ति रस से भरे भजन, देशभक्ति से ओतप्रोत धुनें या दर्द भरे नग़मे—हर रंग को लताजी ने अपने स्वरों से जीवंत किया।

उनका पहला बड़ा हिट गीत था "आएगा आनेवाला" (1949) फिल्म "महल" से, जिसे खेमचंद प्रकाश और कमाल अमरोही की टीम ने तैयार किया था। इस गीत ने रातों-रात लता जी को प्रसिद्धि दिला दी। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

1950 और 1960 का दशक लता जी की गायकी का स्वर्ण युग रहा। शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन, मदन मोहन, नौशाद, रोशन, खय्याम जैसे महान संगीतकारों ने उनके साथ मिलकर एक से बढ़कर एक कालजयी गीत रचे। उनकी आवाज़ हर नायिका के साथ इतनी सहजता से मेल खाती थी कि दर्शकों को लगता मानो वही अभिनेत्री स्वयं गा रही हो। "ए मेरे वतन के लोगों" जैसा गीत सुनते समय आज भी आँखें नम हो जाती हैं। वहीं, "लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो" सुनकर दिल में एक मीठी कसक भर जाती है। इसी तरह "अजीब दास्ताँ है ये", "प्यार किया तो डरना क्या", "आज फिर जीने की तमन्ना है" और " आपकी नज़रों ने समझा" - ये सभी गीत केवल फ़िल्मी धुनें नहीं, बल्कि भारतीय जीवन की भावनात्मक धड़कनें हैं।

1970 और 1980 के दशक में भी उनकी जादुई आवाज़ ने फिल्मों में एक नया जीवन डाला। चाहे "तेरे बिना ज़िंदगी से कोई शिकवा तो नहीं" (आंधी) हो, या "ज़िन्दगी की न टूटे लडी" (क्रांति) या फिल्म "सिलसिला" के गाने - हर गीत में उन्होंने भावनाओं को नई ऊँचाई दी।

1990 के दशक और उसके बाद भी, जब नई पीढ़ी के गायक-गायिकाएँ सामने आए, तब भी लता जी का जादू कायम रहा। उन्होंने ए.आर. रहमान जैसे नए दौर के संगीतकारों के साथ भी गाया और "लुकाछुपी बहुत हुई" (रंग दे बसंती), "ओ पालनहारे" (लगान) जैसे गीतों में अपनी शाश्वत प्रतिभा का परिचय दिया।

उनकी गायकी केवल हिंदी फिल्मों तक सीमित नहीं थी। उन्होंने मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असमिया और यहाँ तक कि विदेशी भाषाओं में भी गीत गाए। इस बहुभाषी योगदान ने उन्हें सचमुच भारत की "स्वर कोकिला" बना दिया।

गायकी की विशेषताएँ

लता मंगेशकर की गायकी का जादू केवल उनके स्वर की मधुरता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें समाई भावनाओं की सच्चाई ही उन्हें असाधारण बनाती थी। उनकी आवाज़ इतनी पारदर्शी थी कि श्रोता को हमेशा यह लगता कि गीत सीधे दिल से निकलकर दिल तक पहुँच रहा है।

स्वर की शुद्धता: उनका गला मानो सितार की तरह बिलकुल शुद्ध और संतुलित था। सुरों की ऊँचाई और गहराई को वे सहजता से साध लेती थीं।

भावाभिव्यक्ति: हर गीत में उन्होंने उस परिस्थिति की आत्मा को उतार दिया। रूमानी गीतों में कोमलता, भक्ति गीतों में समर्पण और दर्द भरे नग़मों में गहरी संवेदना—सब कुछ उनकी आवाज़ में स्वाभाविक रूप से झलकता था।

शैली की बहुमुखी प्रतिभा: उन्होंने शास्त्रीय रागों पर आधारित कठिन बंदिशें भी उतनी ही सहजता से गाई, जितनी सरल धुनों पर आधारित हल्के-फुल्के गीत। यही वजह है कि उनका संगीत श्रोताओं के हर वर्ग तक पहुँचा।

उच्चारण और स्पष्टता: लता मंगेशकर की उच्चारण कला, खासकर हिंदी और उर्दू में, में महारत, उनके शुरुआती करियर में अभिनेता दिलीप कुमार द्वारा उच्चारण संबंधी खामियों की ओर इशारा किए जाने के बाद, उनके द्वारा किए गए अथक स्व-अध्ययन और औपचारिक प्रशिक्षण का परिणाम थी। इसी कारण उन्होंने अपनी उच्चारण क्षमता और शब्दावली में सुधार के लिए एक मौलाना और बाद में संस्कृत और अंग्रेजी के शिक्षकों से शिक्षा ली। उनका स्पष्ट और मधुर उच्चारण उनकी अनूठी शैली के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक था, जो उस समय प्रचलित नासिका स्वरों से हटकर, उन्हें उन पात्रों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करता था जिनके लिए वे गाती थीं।

संवेदनशीलता: कहा जाता है कि लताजी गीत गाते समय पहले उस गीत के भाव को अपने भीतर जीती थीं और फिर उसे स्वर देती थीं। शायद यही कारण है कि उनके गीत केवल सुने नहीं जाते, बल्कि महसूस किए जाते हैं।

सहयोग और संबंध

लता मंगेशकर ने सी.रामचंद्र, शंकर-जयकिशन, सचिन देव बर्मन, मदन मोहन, राहुल देव बर्मन, लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल से लेकर नयी पीढ़ी के अनु मलिक, जतिन-ललित, ए. आर. रहमान जैसे अनेकों संगीतकारों के साथ काम किया। हर युग के साथ उन्होंने अपनी शैली को ढाला, किंतु अपनी मौलिकता को कभी खोने नहीं दिया। कवियों की पंक्तियाँ उनकी आवाज़ पाकर अमर हो गईं, अनेक बॉलीवुड अभिनेत्रियाँ यह मानती थीं कि महान गायिका लता मंगेशकर के गाए गीतों पर अभिनय और उन्हें पर्दे पर प्रस्तुत करना अपने आप में एक बहुत बड़ा सौभाग्य है। उनकी अनुपम आवाज़ भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की पहचान बन चुकी थी और जिस अभिनेत्री ने उनके गीतों पर होंठ मिलाए, उसके लिए वह पल करियर का यादगार क्षण बन जाता था। शुरुआती दौर की अभिनेत्रियाँ जैसे मधुबाला से लेकर बाद की अनेक महान अभिनेत्रियां, सभी लता जी के गीतों की भावनात्मक गहराई को पर्दे पर जीने का अवसर पाना अपने लिए सम्मान समझती थीं। उनके बेमिसाल हुनर और उनके संगीत के चिरस्थायी जादू से जुड़ना, हर अभिनेत्री के लिए गौरव का विषय था।

विरासत और प्रभाव

लता मंगेशकर केवल एक गायिका नहीं, बल्कि भारतीय संगीत की धरोहर थीं। उनकी विरासत इतनी व्यापक है कि उसे शब्दों में बाँधना कठिन है।

फिल्मी संगीत पर प्रभाव: हिंदी फ़िल्म उद्योग का स्वर्ण युग उनकी आवाज़ के बिना अधूरा है। 1940 के दशक से लेकर 2000 तक लगभग हर प्रमुख अभिनेत्री की आवाज़ बनकर उन्होंने पर्दे को जीवंत किया

। भाषाई विविधता: 30 से अधिक भाषाओं में गाए उनके गीत भारत की भाषाई विविधता को एक सूत्र में पिरोते हैं।

नवोदित कलाकारों के लिए प्रेरणा: अनगिनत गायक-गायिकाएँ उन्हें अपना आदर्श मानती हैं। उनकी मेहनत, अनुशासन और सुरों के प्रति समर्पण नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक: "ए मेरे वतन के लोगों" जैसे गीतों ने उन्हें सिर्फ़ गायिका नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामूहिक चेतना की आवाज़ बना दिया।

अंतरराष्ट्रीय पहचान: विश्वभर में भारतीय संगीत का प्रतिनिधित्व करते हुए लता जी ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया।

उनकी विरासत केवल गाए हुए हज़ारों गीतों में नहीं, बल्कि हर भारतीय के दिल में बसी उस स्मृति में है कि - जब लता मंगेशकर गाती थीं, तो पूरा देश एक साथ सुनता और भावविभोर हो जाता था।

व्यक्तिगत भावनाएँ

हममें से हर किसी के जीवन में लताजी का कोई न कोई गीत गहराई से जुड़ा है। कभी यह गीत हमारी ख़ुशियों का साथी बना, तो कभी कठिन पलों में सांत्वना का स्रोत। ऐसा लगता है मानो लताजी ने हमारी भावनाओं को स्वर देकर हमें ही लौटा दिया। यही उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी - हर श्रोता को यह एहसास कराना कि यह गीत उसी के लिए गाया गया है।

लता मंगेशकर का जाना एक युग का समाप्त होना था, किंतु उनकी आवाज़ आज भी उतनी ही जीवंत है। वे केवल एक गायिका नहीं, बल्कि भारत की भावनाओं की ध्वनि थीं। उनके गीत आने वाली पीढ़ियों तक हमें यह याद दिलाते रहेंगे कि संगीत केवल ध्वनि नहीं, बल्कि आत्मा की भाषा है।

लता जी सचमुच में संगीत सरस्वती थी, स्वर कोकिला थीं, और रहेंगी। उनका स्वर सदा अमर रहेगा।

वर्ष 2024 की रिपोर्ट संख्या 6 - सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधन पर निष्पादन लेखापरीक्षा - कार्यकारी सारांश

नि म ले प ने यह लेखापरीक्षा क्यों की?

स्वास्थ्य मानव विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। नागरिकों को आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में स्वास्थ्य सुविधाओं की महत्वपूर्णता को देखते हुए, कोविड-19 प्रकोप के साथ सामने आए उपलब्ध स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में सरकारी खर्च और स्पष्ट अंतराल के मद्देनजर, नि म ले प ने केरल में स्वास्थ्य क्षेत्र के समग्र प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिए एक निष्पादन लेखापरीक्षा की ।

लेखापरीक्षा के दायरे में 2016-22 की अवधि के अभिलेखों की जांच शामिल थी, जिसका उद्देश्य (1) सभी स्तरों पर आवश्यक मानव संसाधनों की उपलब्धता, जैसे डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ, पैरामेडिक्स, आदि, (2) स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता और प्रबंधन, (3) दवाओं, औषधों, उपकरणों और अन्य उपभोग्य सामग्रियों की उपलब्धता, (4) स्वास्थ्य देखभाल के लिए वित्त पोषण की पर्याप्तता, (5) गुणवत्ता स्वास्थ्य सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिए नियामक तंत्र की पर्याप्तता और प्रभावशीलता और (6) क्या स्वास्थ्य पर राज्य के खर्च ने सतत विकास लक्ष्य-3 (अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण) के अनुसार लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार किया है।

प्रमुख लेखापरीक्षा अवलोकन

आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत सभी स्तरों के अस्पतालों में स्वीकृत पदों के सापेक्ष डॉक्टरों की कमी देखी गई। विशेषज्ञ डॉक्टरों के मामले में यह कमी और भी गंभीर थी। आयुष के अंतर्गत परीक्षण-जाँच किए गए तृतीयक स्तर के अस्पतालों में भी डॉक्टरों की कमी देखी गई। इसी प्रकार, परीक्षण-जाँच किए गए अस्पतालों में नर्सों, फार्मासिस्टों और लैब तकनीशियनों की भी कमी देखी गई। सरकारी अस्पतालों में जनशक्ति की कमी न केवल जनता की गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच को प्रभावित करती है, बल्कि उपलब्ध संसाधनों पर भी दबाव डालती है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी वितरण में बाधा उत्पन्न होती है। राज्य के 14 में से दो जिलों में जनसंख्या के अनुपात में डॉक्टरों की संख्या सबसे अधिक प्रतिकूल थी। राज्य के 14 में से 13 जिलों में मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की कमी तीन से 33 प्रतिशत तक थी ।

बुनियादी ढाँचे, आवश्यक मानवशक्ति आदि की कमी के कारण, पारिवारिक स्वास्थ्य केंद्र आर्द्रम मिशन के अंतर्गत अपेक्षित सेवाएँ प्रदान नहीं कर पा रहे थे और इस प्रकार उचित लागत, समय और संतुष्टि के साथ बेहतर सेवाएँ प्रदान करने का उद्देश्य पूरा नहीं हो पा रहा था। अस्पतालों के बाह्य रोगी विभागों में डॉक्टरों की संख्या चिकित्सा देखभाल चाहने वाले रोगियों की संख्या के अनुरूप नहीं थी, जिससे डॉक्टरों पर बोझ बढ़ रहा था और रोगियों को असुविधा हो रही थी। भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों (आईपीएचएस) द्वारा निर्धारित न्यूनतम आवश्यक सेवाएँ कई अस्पतालों में उपलब्ध नहीं थीं। विभिन्न श्रेणियों के अस्पतालों में सभी प्रकार की वांछनीय रोग संबंधी सेवाएँ और उपकरण उपलब्ध नहीं थे।

केरल मेडिकल सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड (केएमएससीएल) के गठन का मुख्य उद्देश्य अस्पतालों में हर समय दवाओं की कमी को दूर करना था, जो तभी संभव है जब मांगपत्र यथार्थवादी हों और मांग की गई मात्रा की खरीद की जाए। लेखापरीक्षा में पाया गया कि उपरोक्त उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, जिसके परिणामस्वरूप लेखापरीक्षा अवधि के दौरान अस्पतालों में दवाओं का स्टॉक खत्म हो गया। अस्पतालों में दवाओं की कमी का कारण वित्तीय सीमा निर्धारित होने, बोली पर प्रतिक्रिया न मिलने, विक्रेताओं द्वारा दवाओं की आपूर्ति में देरी/गैर-आपूर्ति आदि के कारण अपर्याप्त मांगपत्र था। लगभग 82 प्रतिशत दवाओं के आपूर्तिकर्ताओं ने अपनी खेप में देरी की और कई मामलों में, केएमएससीएल द्वारा उन्हें देरी के लिए दंडित नहीं किया गया। केवल 10 प्रतिशत दवाओं की गुणवत्ता जाँच (QC) करने की नीति से अपेक्षित परिणाम नहीं मिले क्योंकि 46 दवाओं के सभी बैच और 14 आपूर्तिकर्ताओं से प्राप्त सभी आपूर्तियाँ लेखापरीक्षा अवधि के दौरान QC से बच गई। खरीद में देरी और उपकरणों के रखरखाव में कमी के कारण कई महत्वपूर्ण चिकित्सा उपकरण अस्पतालों में उपलब्ध नहीं थे। तृतीयक अस्पतालों में उपकरणों के नियमित रखरखाव की व्यवस्था नहीं थी, जिसके परिणामस्वरूप रोगियों को सेवाएँ प्रदान करने से इनकार कर दिया गया।

राज्य में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का निर्माण और प्रशिक्षित कार्यबल की तैनाती आवश्यक है। राज्य में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की कमी आईपीएचएस की तुलना में क्रमशः 14 और 35 प्रतिशत थी। नियोजित बुनियादी ढाँचे के निर्माण में प्रगति धीमी थी। बुनियादी ढाँचे के कार्यों को शुरू करने/पूरा करने में अत्यधिक देरी हुई, मुख्यतः वैधानिक मंजूरियों में देरी, दोषपूर्ण योजना, उपयुक्त स्थलों की पहचान न होना आदि कारणों से। धन की कमी, योजना में बदलाव आदि के कारण कार्यों/परियोजनाओं का परित्याग भी देखा गया। राज्य में तृतीयक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार के लिए बनाई गई परियोजनाएँ/योजनाएँ प्रशासनिक स्वीकृति जारी करने में देरी, धनराशि जारी करने, निगरानी में ढिलाई आदि के कारण अधूरी रहीं, जिससे परियोजनाओं/योजनाओं का मूल उद्देश्य ही विफल हो गया।

आवंटित निधियों के संदर्भ में स्वास्थ्य व्यय का प्रतिशत 2016-17 में 97.64 प्रतिशत से घटकर 2020-21 में 93.28 प्रतिशत हो गया, हालाँकि, वर्ष 2021-22 में स्वास्थ्य पर व्यय बढ़कर 98.92 प्रतिशत हो गया। राज्य क्षेत्र का स्वास्थ्य व्यय राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 में परिकल्पित बजट के आठ प्रतिशत से अधिक के लक्ष्य को पूरा नहीं कर सका। लेखापरीक्षा अवधि के दौरान स्वास्थ्य पर ₹48,735.92 करोड़ के व्यय के

मुकाबले, पूंजीगत व्यय केवल 4.24 प्रतिशत था। दवाओं की खरीद के लिए केएमएससीएल को निधि का आवंटन आवश्यकता पर आधारित नहीं था ।

स्वास्थ्य क्षेत्र में चयनित केंद्र प्रायोजित योजनाओं का कार्यान्वयन संतोषजनक नहीं था । प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाई) के अंतर्गत, लाभार्थियों को बीमा दावों के भुगतान में अत्यधिक देरी देखी गई। पीएमजेएवाई के कार्यान्वयन में सहायता के लिए एक जिला कार्यान्वयन इकाई और राज्य स्तर पर धोखाधड़ी-रोधी, चिकित्सा लेखा परीक्षा और सतर्कता के लिए जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ एक संयुक्त इकाई का गठन नहीं किया गया था। जननी सुरक्षा योजना और जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले लाभार्थियों की संख्या कम थी ।

कई मामलों में, स्वास्थ्य क्षेत्र में नियामक तंत्र अपर्याप्त पाया गया। नैदानिक प्रतिष्ठान अधिनियम और नियमों का कार्यान्वयन, जिनका उद्देश्य अन्य बातों के अलावा, सुविधाओं और सेवाओं के मानक निर्धारित करना था, अभी तक पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाया है और ये उद्देश्य अभी भी अप्राप्त हैं। राज्य में कुछ ब्लड बैंक बिना लाइसेंस के काम करते पाए गए। राज्य में मौजूदा जैव-चिकित्सा अपशिष्ट उपचार और निपटान सुविधाएँ दबाव में थीं और ऐसी और सुविधाएँ स्थापित करने की तत्काल आवश्यकता थी। कुछ अस्पतालों में रेडियोग्राफिक उपकरणों का उपयोग परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड के लाइसेंस के बिना किया जा रहा था ।

केरल ने अभी तक सतत विकास लक्ष्यों के अंतर्गत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य योजना/विज़न दस्तावेज़ तैयार नहीं किया है। आत्महत्या दर, सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मृत्यु दर और स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति खर्च जैसे कुछ संकेतकों को शामिल करके राज्य के प्रदर्शन का आकलन करने पर, 2020-21 में राज्य पहले स्थान से नौवें स्थान पर खिसक गया। राज्य में स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति खर्च देश में दूसरे स्थान पर था। इसी प्रकार, प्रति एक लाख जनसंख्या पर आत्महत्या दर और सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से अधिक थी ।

नि म ले प की सिफारिशें

इस रिपोर्ट में, स्वास्थ्य के लिए व्यय बढ़ाने, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं का विस्तार करने, पर्याप्त मात्रा में दवाओं की खरीद, आवश्यक उपकरणों की खरीद और रखरखाव, नैदानिक प्रतिष्ठान अधिनियम के प्रवर्तन को मजबूत करने, जैव-चिकित्सा अपशिष्ट उपचार संयंत्र की स्थापना आदि की आवश्यकता को शामिल करते हुए 15 सिफारिशें की गई हैं। इस रिपोर्ट में निम्नलिखित सिफारिशें की गई हैं:

- सरकार को विभिन्न स्तरों और क्षेत्रों में डॉक्टरों और पैरामेडिकल कर्मचारियों की आवश्यकता का आकलन करना चाहिए और आईपीएचएस/आर्द्रम मिशन में निर्धारित मानदंडों के अनुसार आवश्यक मानव संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

- सरकार को सबसे प्रतिकूल अनुपात वाले जिलों में डॉक्टरों की संख्या बढ़ाकर राज्य में जनसंख्या अनुपात में व्यापक असमानता को कम करने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आईपीएचएस मानदंडों के अनुसार, न्यूनतम सुनिश्चित सेवाएं, निर्धारित रोगी सुविधा सेवाओं के साथ-साथ सभी स्तरों के अस्पतालों में उपलब्ध हों।

- सरकार को मरीजों के समय पर और गुणवत्तापूर्ण उपचार के लिए अस्पतालों में पैथोलॉजिकल सेवाओं, उपकरणों और जनशक्ति की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।

- सरकार को केएमएससीएल को आवश्यक निर्देश जारी करने चाहिए ताकि अस्पतालों में दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई की जा सके और आपूर्ति वास्तविक आवश्यकता के आधार पर हो, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि मांगी गई दवाएं बिना देरी के खरीदी जाएं।

- सरकार को संकट की स्थिति के दौरान की जाने वाली खरीद के लिए दिशानिर्देश जारी करने चाहिए, जिसमें बेहतर पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर दिया जाए ताकि एक बेहतर सुसज्जित सार्वजनिक खरीद प्रणाली स्थापित हो जो ऐसी स्थिति के दौरान सरकार को प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने में सक्षम हो।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अस्पतालों, विशेषकर तृतीयक अस्पतालों में आवश्यक चिकित्सा उपकरण उपलब्ध हों और उपलब्ध उपकरणों के रखरखाव तथा पुराने उपकरणों की मरम्मत की उचित व्यवस्था हो।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी जिलों में जनसंख्या के अनुपात में आईपीएचएस के अनुसार आवश्यक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उपलब्ध हों।

- सरकार को उन बुनियादी ढाँचे के कार्यों की पहचान और विश्लेषण करना चाहिए जिनका कार्य अधूरा है और उन्हें शीघ्र पूरा करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। सरकार को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि केवल उन्हीं कार्यों को मंजूरी दी जाए जो बिना किसी बाधा के भूमि की उपलब्धता जैसी शर्तों को पूरा करते हों और अपेक्षित मंजूरी और धनराशि जारी करने की प्रक्रिया में कोई देरी न हो।

- सरकार को राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप राज्य क्षेत्र के स्वास्थ्य व्यय को बढ़ाने के लिए एक कार्य योजना तैयार करनी चाहिए।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी पात्र लाभार्थी जननी सुरक्षा योजना और जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम के तहत परिकल्पित लाभों से वंचित न रहे। यह संभावित लाभार्थियों के बीच परियोजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं/आशा कार्यकर्ताओं को शामिल करके किया जा सकता है।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नैदानिक प्रतिष्ठान अधिनियम राज्य में समयबद्ध तरीके से लागू हो ताकि उन प्रतिष्ठानों को स्थायी पंजीकरण प्रदान किया जा सके जो निर्धारित न्यूनतम मानकों का पालन करते हैं।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि औषधि नियंत्रक रक्त बैंकों के लाइसेंस की वैधता की निगरानी के लिए एक तंत्र स्थापित करे और यह भी सुनिश्चित करे कि उनका बिना किसी देरी के नवीनीकरण हो।

इसके अलावा, विभागीय कर्मचारियों के लिए प्रासंगिक अधिनियमों और नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि राज्य में नए जैव-चिकित्सा अपशिष्ट (बीएमडब्ल्यू) उपचार सुविधा की स्थापना के लिए तत्काल और समयबद्ध कार्रवाई की जाए और राज्य में उत्पन्न बीएमडब्ल्यू के आकलन के लिए एक तंत्र स्थापित किया जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी बीएमडब्ल्यू का उचित निपटान किया जाए।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सतत विकास लक्ष्य-3 के अंतर्गत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक कार्य योजना तैयार करने हेतु तत्काल कदम उठाए जाएं और स्वास्थ्य आदि पर जेब से होने वाले खर्च में कमी से संबंधित राष्ट्रीय स्तर के संकेतकों के अनुसार प्रदर्शन में सुधार किया जाए।

निहिता साइकुमार
सुपुत्री जे. ए. साईकुमार ,वरि. लेखापरीक्षक

अन्नम पर: ब्रह्म स्वरूपं

माँ के स्वभाव में सत्विकता होने पर भी संतान आवेश जनक क्यों होते है ? भोजन बनाना एक प्रकार का भगवान से प्राप्त हुआ वरदान है। मगर आज कल खाना बनाना एक पाचक कला बना गई है। और एक बात, रसोई जो है वो एक मंदिर के समान होता है। पूर्वजों का कहना है किरसोई में च ,ूल्हा जलाना प्रार्थना के समान है। अर्थ ये हुआ की जो भोजन बनाया जा रहा है वो सारे परिवार के सदस्यों को पूर्ण रूप से आरोग्य रखने व भूख मिटाने की प्रार्थना है।

वजह नहीं मालूम मगर पूर्वज भोजन बनाते समय कुछ पारायण करते हुए खाना,बनाते थे। जैसे कि हनुमान चालीसा और गणेश पंचांग। ये पारायण पूरा होने से पहले रसोई में व्यंजन बनना पूर्ण हो जाता था। इस तरह करने पर, बनाया हुआ खाना खाने वालों पर भी एक अच्छा प्रभाव पड़ता था। इसी विषय को लेकर एक कहानी प्रस्तुत है।

एक गाँव में एक निष्ठा सिद्ध ब्राह्मण रहता था। वो ब्राह्मण सिर्फ देवता आराधना और पुरोहितम को छोड़कर कुछ नही जानते थे। एक दिन उस ब्राह्मण को एक जमींदार ने भोजन के लिए आमंत्रित किया। हमेशा की तरह ब्राह्मण ने उस जमींदार के घर का निमंत्रण स्वीकार कर भोजन ग्रहण करने चला गया। ऐसा कभी नही हुआ की ब्राह्मण की दृष्टि केले के पत्ते पर परोसे गए खाने पर न होकर पास में रखे चांदी के बर्तन पर हो। ब्राह्मण भोजन कर रहे थे मगर उनकी नजर और मन पूरी तरह चांदी के बर्तन पर थी। आखिर में उनका भोजन पूर्ण हुआ। जैसे ही उनका भोजन पूर्ण हुआ ,पानी से भरे हुए चांदी के बर्तन से हाथ धोए और उस चांदी के बर्तन को अपने थेले में डाल लिया। उसके पश्चात जमींदार से दक्षिणा स्वीकार कर के अपने घर लौट आए। घर पहुंचते ही पैर धोए और घर के अंदर आसन्न हुए। जैसे ही ब्राह्मण की पत्नी ने प्यास बुझाने के लिए पानी दिया, पानी पीते ही ब्राह्मण को ऐसा लगा की कोई उन्हे चांटा मारकर होश में लाया हो ,जैसे पानी में डूबता हुआ इंसान तुरंत पानी से बाहर आकर साँस लेता है ब्राह्मण ने तुरंत थैला साथ लियापत्न ,ी को बिना बताए जमींदार के घर की ओर चल पड़ा। ब्राह्मण को वापस आता देख जमींदार को आश्चर्य हुआ। ब्राह्मण ने जमींदार से बड़ी नम्रता से पूछा कि उनके घर लिए सारा खाने का सामान कहाँ से आता है क्या उन्हें नई महिला रसोइया मिल गई है जमींदार ने पत्नी को बुलाया और पूछा। जमींदार कि पत्नी ने बताया ? किउन्होंने एक महीने पहले एक नई महिला रसोइया को नियुक्त किया है। बात न समझ आने पर जमींदार ने ब्राह्मण से कारण और मामले को विवरण में पूछा। ब्राह्मण ने उत्तर में कहा किउनके जीवन में ऐसा कभी , नही हुआ। उन्होंने कहा कि उन्होंने जमींदार के घर से चोरी की है। ब्राह्मण को यह समझ नही आया की उसकी बुद्धि विकृत कैसे हुई। फिर घर जाकर अपनी पत्नी के हाथ से पानी पीने के पश्चात उनको होश आया की उनसे गलती हुई है, अनर्थ हुआ है और उन्हे बहुत बुरा लगा। ब्राह्मण ने जमींदार से पूछा कि क्या उनकी महिला रसोइया उनके घर में चोरी कर रही हैंइस महिला से बनवाया ?और वो ये काम लगातार कर रही हो ?

हुआ भोजन खाने के पश्चात ब्राह्मण कोयह एहसास हुआ। जमींदार ने महिला रसोइया को बुलाया और चोरी के मामले में सच बोलने के लिए डराया। आखिर में महिला रसोइया ने चोरी को स्वीकार किया। महिला रसोइया जमींदार के घर से खाने का सामान चोरी कर रही थी। जमींदार ने तुरंत महिला रसोइया को काम से निकाल दिया। ब्राह्मण ने चुराया हुआ चांदी का बर्तन जमींदार को लौटाया और क्षमा की भीख मांगी और अपने घर लौट आया।

इस कहानी से ये मालूम होता है कि रसोई में व्यंजन बनाने वाले के व्यवहार का परिवार के अन्य सदस्यों पर किस तरह प्रभावित करता है। ग्रहण करने का विचार आवश्यक है। और अतिथि देवो भाव : अरथार्थ अतिथि देव के समान है। भोजन तैयार करके खाली मेज पर परोस ,कहते हैना काफी नही हैं, ,जमीन पर केले के पत्ते पर ही सहीमगर अच्छे मन से ,प्रेम से ,व आत्मसमर्पण से खाना ,परोसना चाहिए। बहुत से घरों में झूठे खाने पर उतना ध्यान नहीं देते है। बचे हुए खाने को अन्य में मिल देते है। अन्य बातें जैसे उलटे हाथ से खाना न परोसना खाते समय एक दूसरे का थाली में ,भोजन का आदान प्रदान करना, का ध्यान रखना चाहिए । भोजन परमपिता ब्रह्मदेव के समान हैउन का स्वरूप है। भोजन को मर्यादा , पूर्वक ग्रहण करना चाहिए।

आदिशंकर .एस
सुपुत्र संध्या पी वी

पहला कन्याकुमारी यात्रा अनुभव

यद्यपि कन्याकुमारी की यात्रा एक संयोग मात्र थी, लेकिन यह मेरी एक पुरानी इच्छा की पूर्ति भी थी। मैंने सुना था कि यह एक खूबसूरत जगह है जिसका केरल से गहरा संबंध है, भले ही यह तमिलनाडु में है। यधपि हमारा पूरा परिवार तिरुवनंतपुरम से कन्याकुमारी तक की कार यात्रा में हमारे साथ था, फिर भी मैं ही एकमात्र व्यक्ति था जो कन्याकुमारी पहली बार देख रहा था। चूंकि यात्रा धीमी थी और इसमें लगभग तीन घंटे लग रहे थे, इसलिए हम शाम को ही कन्याकुमारी पहुंचे।

छुट्टी के कारण पार्किंग खचा-खच भरी थी। हमने सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी की और समुद्र तट की ओर चले गए। गेट से समुद्र तट तक पैदल चलना एक विशेष अनुभव था। दोनों ओर विभिन्न दुकानें थी , जिनमें चश्मा, टोपी, शंख हार आदि बिक रहे थे। यात्री विभिन्न भाषाओं में दुकानदारों से मोल-भाव कर रहे हैं। उस दिन सूर्यास्त देखने, सड़क किनारे की दुकानों और भोजन का आनंद लेने के बाद, मैंने रात ८ बजे के आसपास एक कमरा खोजने, की कोशिश की।

कन्याकुमारी के मुख्य आकर्षण देवी मंदिर, विवेकानन्द रॉक और समुद्र तट हैं। हमने सुबह-सुबह सूर्योदय देखने, मंदिर जाने और फिर तट से थोड़ा दूर जाकर विवेकानन्द रॉक की ओर जाने की योजना बनाई, जो समुद्र में स्थित दो चट्टानों में से एक थी। वहां विवेकानन्द की प्रतिमा स्थापित है, जो स्वामी विवेकानन्द की कन्याकुमारी यात्रा और समुद्र में

तैरते समय एक चट्टान पर उनके ध्यान की याद दिलाती है। हम नाव से समुद्र के रास्ते, जिसमें लहरें उठ रही थीं, उस मंडप की ओर चल पड़े। यह यात्रा कुछ हद तक डरावनी है, लेकिन उससे भी अधिक रोमांचक है। हम भी उस ध्यान कक्ष में ध्यान में डूब सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रदान की गई आध्यात्मिक चमक सर्वत्र व्याप्त हो गई।

इसके बगल में चट्टान पर तिरुवळ्ळुवर की एक मूर्ति हैं। उस दिन वहां पहुंचने का कोई रास्ता नहीं था क्योंकि तिरुवळ्ळुवर प्रतिमा तक पहुंचने के लिए कांच का पुल निर्माणाधीन था। बाद में समाचारों के माध्यम से बताया गया कि इसे आगंतुकों के लिए खोल दिया गया है। वहां कई घंटे बिताने के बाद, हम दोपहर में थोड़ा निराश होकर नाव से वापस लौट आए।

समुद्र तट पर तैरना प्रतिबंधित था क्योंकि समुद्र शांत नहीं था। समुद्र तट की यात्रा तीन समुद्रों के मिलन बिंदु, त्रिवेणी संगम में डुबकी के साथ समाप्त हुई। बाद में, हमने गांधीजी के स्मारक हॉल का भी दौरा किया। कभी उबलता हुआ मक्का और कभी खट्टे आम की खाए। जब लगातार चलने से हमारे पैर थक गए तो हम होटल के कमरे में चले गए।

शाम को हम होटल से निकले, अपने-अपने बैग कार में रखे और वापस तिरुवनंतपुरम की यात्रा के लिए तैयार हो गए। हवा और लहरों को पीछे छोड़ते हुए, मैं अच्छी यादें अपने साथ ले आया और थोड़ी उदासी के साथ चला आया । ये है पहली यात्रा की यादें ।

ईसाबेल वी. एस., कक्षा IV
सुपुत्री विजु वी.एस., वरि. ले.प.अ. द्वारा बनाया गया चित्र ।

ओणम 2025

केरल का प्रमुख त्योहार

महालेखाकारों के कार्यालय,केरल, तिरुवनंतपुरम में ओणम-2025 का शुभारंभ ।

महिला कर्मचारियों द्वारा ओणम उत्सव 2025 पर प्रस्तुत पारंपरिक नृत्य 'तिरुवातिरा' ।

ओणम उत्सव 2025 के मौके पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण ।

ओणम के उत्सव पर अनुभागों द्वारा बनाए गए पूक्कलम (फूलों की रंगोली) ।

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम